Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2023-25

www.dainikvishwapariwar.com

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 24 ● वर्ष : 14 ● रायपुर, शुक्रवार 24 जुलाई 2026 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

धर्म ध्यान दूसरों के माध्यम से नहीं होता, उसके लिए स्वयं कमर कसना चाहिये।

Religious meditation is not attained through others, for is one must resolve him self.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

पेपर लीक पर मोदी बोले- फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाएंगे

■ **युवाओं के कल्याण और भविष्य से बढ़कर कुछ नहीं, दोषी बख्शे नहीं जाएंगे**

नई दिल्ली। पीएम नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को ऐलान किया कि पेपर लीक के दोषियों को सजा देने के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट्स बनाए जाएंगे। युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा। पीएम का यह ऐलान कॉकरोच जनता पार्टी और विपक्ष के प्रदर्शन के बीच आया है। सीजेपी पिछले 34 दिन से जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर रही है। वहीं, एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक 26 दिन से भूख हड़ताल पर हैं। वे गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल में भर्ती हैं। वहीं उनका इलाज चल रहा है।

पीएम मोदी ने पर पोस्ट कर कहा, देश के युवाओं का हित और उनका भविष्य हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। देश में अब तक पेपर लीक मामलों की सुनवाई सामान्य अदालतों में होती थी, इसलिए फैसला आने में कई साल लग जाते थे। अब प्रधानमंत्री ने इसके लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाने की घोषणा की है, ताकि फैसला तेजी से हो सके। भारत में फास्ट ट्रैक कोर्ट की शुरुआत साल 2000 में हुई थी। इनका गठन 11वें वित्त आयोग की सिफारिश पर किया गया था। आयोग ने देशभर में

1734 फास्ट ट्रैक कोर्ट बनाने के लिए स्पेशल फंड की अनुशंसा की थी। फास्ट ट्रैक कोर्ट का रिकॉर्ड भी बेहतर रहा है। केंद्र सरकार के अनुसार, रेप और पास्को मामलों के लिए बनी फास्ट ट्रैक कोर्ट ने 2019 से 2025 तक 3.06 लाख से ज्यादा मामलों का निपटारा किया है।

इन अदालतों में मामलों के निपटारे का रेट 96.28 प्रतिशत है, यानी जितने नए मामले आए, लगभग उतने ही मामलों का निपटारा भी हुआ। हालांकि, नए मामले लगातार दर्ज होने के कारण 2025 के अंत तक 2.45 लाख से ज्यादा मामले पेंडिंग थे, जबकि 2024 के अंत में यह संख्या 2.04 लाख थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 जुलाई को एनडीए संसदीय दल की बैठक में कहा कि नीट पेपर लीक की खबर मिलते ही सरकार ने तुरंत कार्रवाई की। इस मामले में 13 आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। छात्रों का भविष्य सुरक्षित रहे, इसलिए दोबारा परीक्षा कराई गई और समय पर परिणाम भी घोषित किए गए। पीएम ने कहा कि आगे ऐसी घटनाएं रोकने के लिए सख्त कदम उठाए गए हैं और दोषियों को देश के शीर्ष वकीलों की मदद से कड़ी से कड़ी सजा दिलाई जाएगी, ताकि भविष्य में कोई ऐसी हरकत करने की हिम्मत न करे। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि नीट पेपर लीक कोई राजनीतिक या दलगत मुद्दा नहीं, बल्कि देश के युवाओं और उनके भविष्य से जुड़ा गंभीर विषय है।

अमलीपदर की रथयात्रा आस्था और संस्कृति की अमूल्य धरोहर : मुख्यमंत्री

■ **महतारी वंदन योजना से माताओं और बहनों का बढ़ा आत्मविश्वास : मुख्यमंत्री श्री साय**

रायपुर (विश्व परिवार)। अमलीपदर की ऐतिहासिक रथयात्रा छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक समरसता का प्रतीक है। भगवान श्री जगन्नाथ सबको साथ लेकर चलने और लोककल्याण का संदेश देते हैं। महाप्रभु का आशीर्वाद प्रदेशवासियों पर सदैव बना रहे, यही उनकी प्रार्थना है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज गरियाबंद जिले के अमलीपदर में आयोजित भगवान श्री जगन्नाथ की ऐतिहासिक रथयात्रा महापर्व को संबोधित करते हुए यह बात कही।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय आज रथयात्रा महोत्सव में शामिल हुए और भगवान श्री जगन्नाथ, भगवान बलभद्र एवं माता सुभद्रा की विधिवत पूजा-अर्चना कर प्रदेशवासियों के सुख, समृद्धि, शांति और खुशहाली की कामना की। इस अवसर पर उपमुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री श्री विजय शर्मा, राजिम विधायक श्री रोहित साहू, छत्तीसगढ़ गौ सेवा आयोग के उपाध्यक्ष श्री राजीव लोचन महाराज सहित अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि राज्य सरकार विकास और जनकल्याण के संकल्प के साथ निरंतर कार्य कर रही है। सरकार की प्राथमिकता यह सुनिश्चित करना है कि शासन की योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे और प्रत्येक नागरिक के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आए।

बिजली बिल समाधान योजना की अवधि सितंबर तक बढ़ी

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि मुख्यमंत्री बिजली बिल समाधान योजना की अंतिम तिथि, जो जून माह तक निर्धारित थी, उसे उपभोक्ताओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए तीन माह बढ़ाकर सितंबर तक कर दिया गया है। उन्होंने लोगों से इस योजना का अधिकाधिक लाभ उठाने की अपील की।

उन्होंने कहा कि सरकार आम नागरिकों पर आर्थिक बोझ कम करने और उन्हें राहत प्रदान करने के लिए संवेदनशीलता के साथ निर्णय ले रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महतारी वंदन योजना महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है।

मोदी सरकार के नेतृत्व में भारत की स्वास्थ्य व्यवस्था में ऐतिहासिक बदलाव : जेपी नड्डा

■ **चंडीगढ़ में आयोजित 16वीं ब्रिक्स स्वास्थ्य मंत्रियों की बैठक संपन्न**

चंडीगढ़। भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता 2026 के तहत चंडीगढ़ में आयोजित 16वीं ब्रिक्स स्वास्थ्य मंत्रियों की बैठक गुरुवार को सफलतापूर्वक संपन्न हुई, जिसमें ब्रिक्स सदस्य देशों के स्वास्थ्य मंत्रियों, प्रतिनिधिमंडलों के प्रमुखों, वरिष्ठ अधिकारियों और सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों को एक साथ लाया गया ताकि साझा सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकताओं को संबोधित करने और एक लचीली वैश्विक स्वास्थ्य संरचना को आगे बढ़ाने में सहयोग को मजबूत किया जा सके। भारत की ब्रिक्स अध्यक्षता के तहत आयोजित 'लचीलापन, नवाचार, सहयोग और स्थिरता के लिए निर्माण' विषय के अंतर्गत आयोजित इस बैठक ने सदस्य देशों को प्रमुख स्वास्थ्य चुनौतियों पर विचार-विमर्श करने और स्वास्थ्य प्रणालियों को मजबूत करने, नवाचार को बढ़ावा देने, महामारी की तैयारी को बढ़ाने और सतत सहयोग के माध्यम से सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज को आगे बढ़ाने के प्रति अपनी सामूहिक प्रतिबद्धता की पुष्टि करने के लिए एक मंच प्रदान किया।

देशभर में मॉनसून की स्थिति पर गृह मंत्रालय की नजर

■ **प्रभावित राज्यों को हरसंभव सहायता**

नई दिल्ली। देशभर में जारी मॉनसून और भारी बारिश की स्थिति पर केन्द्रीय गृह मंत्रालय लगातार नजर बनाए हुए है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में मंत्रालय प्रभावित राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों को हरसंभव सहायता उपलब्ध करा रहा है। गृह मंत्रालय का कहना है कि समय रहते चेतावनी जारी करने, राहत एवं बचाव कार्यों के समन्वय और नुकसान के आकलन के लिए सभी संबंधित एजेंसियां सक्रिय हैं।

गृह मंत्रालय का एकीकृत नियंत्रण कक्ष (आईसीटी) भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी), केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) और भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र सहित अन्य केंद्रीय एजेंसियों के समन्वय से संचालित हो रहा है। यह राज्य और जिला आपात संचालन केन्द्रों को समय पर अलर्ट भेजने के साथ ही चौबीसों घंटे राहत एवं बचाव कार्यों की निगरानी कर रहा है।

जुलाई 2026 के दौरान नगालैंड, अरुणाचल प्रदेश, असम, पश्चिम बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, दादरा और नगर हवेली एवं दमन और दीव तथा जम्मू-कश्मीर सहित कई राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में भारी बारिश और भूस्खलन की स्थिति बनी है, जिससे जनजीवन प्रभावित हुआ है। राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) राज्य आपदा मोचन बल, राज्य पुलिस और स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर राहत एवं बचाव कार्यों में जुटा है।

सेवा सेतु
जनता के द्वार, डिजिटल सरकार

आपकी ज़रूरत की सेवाएं
अब घर बैठे एक क्लिक में

प्रमुख सेवाएं

- ✓ जाति प्रमाण पत्र
- ✓ आय प्रमाण पत्र
- ✓ निवास प्रमाण पत्र
- ✓ विवाह प्रमाण पत्र
- ✓ राशन कार्ड सेवाएं
- ✓ पेंशन योजनाएं
- ✓ जन्म / मृत्यु प्रमाण पत्र
- ✓ व्यापार लाइसेंस

567 सेवाएँ
35 विभाग एक मंच पर
16,900+ सेवा केंद्र
44 लाख+ आवेदन

डिजिटल सुशासन की नई पहचान
सेवाएं हुईं त्वरित, पारदर्शी और आसान

अधिक जानकारी हेतु ◂ स्कैन करें

जनहित में तकनीक, जनसेवा में नवाचार
sewasetu.cgstate.gov.in

92034 06400

SAMVAD- 48530/114

रायपुर में खम्हारडीह थाने के बाहर कांग्रेस का प्रदर्शन

दीपक बैज बोले- मंत्री-विधायकों ने पत्थर मारने उकसाया,

रायपुर (विश्व परिवार)। राजधानी में बुधवार को भाजपा और कांग्रेस के प्रदर्शन के दौरान जमकर बवाल हुआ। पुलिसकर्मियों के घायल होने पर 12 नामजद और कई अज्ञात कांग्रेस कार्यकर्ताओं के खिलाफ गैर-जमानती धाराओं पर एफआईआर दर्ज की गई। अब इसके विरोध में प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज समेत कई नेता खम्हारडीह थाने में बीजेपी नेताओं-कार्यकर्ताओं पर काउंटर एफआईआर दर्ज कराने पहुंचे हैं।

थाने के बाहर बैठकर कांग्रेसी प्रदर्शन कर रहे हैं, जबकि बैज समेत कई नेता अंदर पुलिस अधिकारियों से चर्चा कर रहे हैं। कांग्रेस ने कहा कि, जितने मंत्री, विधायक और कार्यकर्ता आए, उन पर भी काउंटर एफआईआर दर्ज हो। दीपक बैज ने कहा कि, वो पत्थर मारेंगे, तो हम पुलिस के भरोसे बैठे रहेंगे क्या? दीपक बैज ने कहा कि, बीजेपी के खिलाफ हमारी लड़ाई आर-पार की है। सच्चाई, युवाओं और छात्रों के लिए लड़ाई है। यह लड़ाई हम लड़ेंगे। पूरे देश में प्रदर्शन चल रहा है, इसलिए सरकार बौखला गई है। आपके एफआईआर से न कोई डरा है, न कोई डरेगा।

अभी बीजेपी के मंत्रियों और विधायकों के खिलाफ एफआईआर कर दे। मंत्री कानून-व्यवस्था बनाने की जगह कार्यकर्ताओं को पत्थर मारने के लिए उकसा रहे हैं। इसलिए हम एकपक्षीय कार्रवाई से सहमत नहीं है। पुलिस कह रही है कि जांच करेंगे। फिर बिना जांच किए कार्रवाई कैसे हुई। आप सीसीटीवी फुटेज लाइए, बैठकर देखेंगे कि, पुलिसकर्मियों को जो पत्थर लगा है, वह किसकी ओर से आया है।

क्योंकि, जूते-चप्पल, बॉटल बीजेपी की तरफ से फेंका गया है। हमारे कार्यालय का घेराव करने आए, पत्थर भी हम खाए और एफआईआर भी हमारे ऊपर ही हुआ। जब तक बीजेपी के खिलाफ भी एफआईआर नहीं होती है, तब तक हम यहां बैठे रहेंगे। फिलहाल, कांग्रेस नेताओं और पुलिस अधिकारियों से बातचीत का दौर जारी है। इससे पहले, प्रेस कॉन्फ्रेंस कर प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि, हम चुप बैठने वाले नहीं हैं, हमने चूड़ियां नहीं पहनी हैं। बीजेपी की यह कार्रवाई पूरी तरह से बदले की भावना से प्रेरित है। कांग्रेस इस कानूनी और राजनीतिक कार्रवाई का मुंहतोड़ जवाब देगी।

विचक्षण जैन विद्यापीठ में ग्रैंडपेरेंट्स डे हर्षोल्लास के साथ संपन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। एम.जी. रोड स्थित दादावाड़ी परिसर में 'विचक्षण जैन विद्यापीठ' राजेंद्र नगर रायपुर द्वारा दादा-दादी/नाना-नानी दिवस (ग्रैंडपेरेंट्स डे) का आयोजन अत्यंत उत्साह, उमंग और गरिमा के साथ किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में पधारे बुजुर्गों की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम को सफल बनाया।

कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर संस्था के अध्यक्ष श्री राजेश गिड़िया जी ने अपने स्वागत उद्बोधन में सभी अतिथियों का आत्मीय स्वागत किया। उन्होंने उपस्थित जनों को विचक्षण जैन विद्यापीठ के 'विज़न और मिशन' से अवगत कराया तथा इस बात पर विशेष जोर दिया कि बच्चों में उत्तम संस्कारों के सिंचन के लिए माता-पिता को सतत रूप से प्रयासरत रहने की आवश्यकता है।वहीं संस्था के महामंत्री श्री विजय मालू जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि विद्यापीठ सिर्फ किताबी ज्ञान देने तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यालय का मुख्य उद्देश्य बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ उच्च पारिवारिक संस्कार देना है।

उन्होंने बुजुर्गों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा– ÷जहां माता-पिता अपने बच्चों के सपनों को पूरा करने के लिए उन्हें पंख देकर ऊंची उड़ान भरने में मदद करते हैं, वहीं दादा-दादी बच्चों को सहिष्णुता, दया, अहिंसा, तप और जप जैसे मूल्यों से अवगत कराकर उन्हें अपनी जड़ों से जोड़ते हैं। जिस प्रकार जिस पेड़ की जड़ें मजबूत होती हैं, बड़े से बड़े तूफान भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ पाते; ठीक वैसे ही जब बच्चों के संस्कार मजबूत हो जाते हैं, तो वे जीवन में आने वाले हर उतार-चढ़ाव का सामना करने में सक्षम हो जाते हैं।÷

समारोह में विद्यार्थियों ने अपने दादा-दादी और नाना-नानी के प्रति प्रेम व कृतज्ञता व्यक्त करते हुए विशेष नृत्य-नाटिका, मधुर गीतों एवं मनमोहक नृत्यों की शानदार प्रस्तुतियां दीं। बच्चों के इस बेहतरीन प्रदर्शन पर पूरे हॉल में जोरदार तालियां गूंज उठीं और उपस्थित जनों ने तालियों की गड़गड़ाहट से बच्चों का उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम के अंत में प्रिंसिपल नीतू जैन ने पधारे सभी दादा-दादी, नाना-नानी और विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

समारोह का सबसे भावुक और मुख्य क्षण तब आया जब सभी बच्चों ने अपने दादा-दादी और नाना-नानी के चरण छूकर, उन्हें गले लगाया और जीवनभर उनका आदर व सेवा करने की शपथ लेकर उनके प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता अभिव्यक्त की।

इस अवसर पर कोषाध्यक्ष श्री सुनील गोलछा जी, श्री प्रकाश मालू जी, श्री राजेश सावनसुखा जी, श्री संपत झाबक जी, श्री सुरेश कांकरिया जी , श्री राजेंद्र जैन जी एवं श्री सौरभ पारख जी सहित प्रबंध समिति के अन्य सम्मानित सदस्य व ट्रस्टी विशेष रूप से उपस्थित रहे। खुशियों और अनमोल यादों के साथ यह भव्य आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

जागृति बहू मंडल द्वारा कॉपी वितरण

रायपुर। मिशन उत्कर्ष योजना के अंतर्गत जागृति बहू मंडल द्वारा शासकीय मिडिल प्राइमरी स्कूल, विवेकानंद नगर में विद्यार्थियों के बीच नोटबुक का वितरण किया गया। इस अवसर पर मंडल की सदस्यों ने बच्चों को मन लगाकर पढ़ाई करने, नियमित विद्यालय आने तथा शिक्षा के महत्व को समझने के लिए प्रेरित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।यह सेवा कार्य स्वर्गीय श्रीमती अमरी देवी बरड़िया की पुण्यतिथि की पावन स्मृति में जागृति बहू मंडल की सदस्या रितु बरड़िया के सौजन्य से संपन्न हुआ, जिनके द्वारा सभी विद्यार्थियों के लिए नोटबुक उपलब्ध कराई गई।कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने नोटबुक प्राप्त कर प्रसन्नता व्यक्त की तथा जागृति बहू मंडल के इस सराहनीय प्रयास के लिए आभार व्यक्त किया। मंडल ने भविष्य में भी जरूरतमंद विद्यार्थियों के हित में ऐसे सामाजिक एवं शैक्षणिक सेवा कार्य निरंतर जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया। इस अवसर पर विद्यालय के समस्त स्टाफके साथ जागृति बहू मंडल की सदस्याएँ निधि, नीलू, नेहा, खुशबू, रेनू, ममता, पायल, सुनीता, आभा, रक्षा, रितु एवं पूजा उपस्थित रहीं।

डॉ. यशपाल बावरिया बने छत्तीसगढ़ राज्य होम्योपैथिक परिषद के सदस्य

रायपुर (विश्व परिवार)। लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल की अनुशंसा से रायपुर के वरिष्ठ होम्योपैथी चिकित्सक डॉ यशपाल बावरिया को छत्तीसगढ़ राज्य होम्योपैथिक परिषद में सदस्य मनोनित किये जाने पर हार्दिक शुभकामनाएं। डॉ यशपाल बावरिया विगत 20 वर्षों से होम्योपैथिक चिकित्सा द्वारा जन-मानस की सेवा कर रहे हैं। वे छत्तीसगढ़ एवं मध्य भारत के पहले होम्योपैथिक चिकित्सक है, जिनका नाम गोल्डन बुक आफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./33690/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 23-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33690
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737D00179** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **PUSPA CHHABADIYA. W/O AMARLAL CHHABADIYA. . RAKHI W/O ASHOK NAGPAL. . MONA MENDA W/O KAMAL . SONI SAHU W/O MANOJ KUMARSAHU . VINITA PITAMBER W/O PITAMBER AHUJA . PINKI KHANUJA W/O RINKU KHANUJA , KUSUM AMIT W/O AMIT CHHABADIYA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE AMARLAL CHHABADIYA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री प्रदीप कोडवानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **श्री अशोक कोडवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./33688/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 23-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33688
वार्ड का नाम- 27- इंदिरा गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 27 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR220J00045** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SARLA W/O LAXMIPAT BAID ,UMMED KUMAR S/O POONAM CHAND BAID** पिता/पति, श्री/श्रीमती .. के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री उम्मेद कुमार बैद** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. पूनम चंद बैद** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग विलेख** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./33687/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 23-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33687
वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR225A00138** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MR. MANAKCHAND** पिता/पति, श्री/श्रीमती .. के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्रीमती मैना देवी सुराना पति स्व. मानकचंद सुराना 2. वीरेन्द्र सुराना पिता -स्व. मानकचंद सुराना 3. विक्रम सुराना पिता- स्व. मानकचंद सुराना** पिता/पति, श्री/श्रीमती ....ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ ... / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./33686/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 23-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33686
वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR225A00021** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MANAK CHAND SURANA** पिता/पति, श्री/श्रीमती .. के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. श्रीमती मैना देवी सुराना पति स्व. मानकचंद सुराना 2. वीरेन्द्र सुराना पिता -स्व. मानकचंद सुराना 3. विक्रम सुराना पिता- स्व. मानकचंद सुराना** पिता/पति, श्री/श्रीमती ....ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **फौतीनामा रजिस्ट्री** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)

शहीद स्मारक स्कूल भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./33685/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2026
रायपुर दिनांक : 23-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33685
वार्ड का नाम- 28- शहीद हेमू कालाणी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 28 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR225A00140** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MR. PRAKASH CHAND** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MANAK CHAND** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1. प्रकाश चंद सुराना पिता - स्व. चंदनमल सुराना 2. श्रीमती मैना देवी सुराना पति स्व. मानकचंद सुराना 3. वीरेन्द्र सुराना पिता -स्व. मानकचंद सुराना 4. विक्रम सुराना पिता- स्व. मानकचंद सुराना** पिता/पति, श्री/श्रीमती ....ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **फौतीनामा रजिस्ट्री** / वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री संतोष पाण्डेय
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)

पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /33608/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 23-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33608
वार्ड का नाम-9- पं. मोतीलाल नेहरू वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 9 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227V00296** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **KIRAN VYAS** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SANDEEP VYAS** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **पंकज कुमार सिन्हा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **स्व. महेश्वरी प्रसाद सिन्हा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)

पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /33602/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 23-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33602
वार्ड का नाम-51- लाल बहादुर शास्त्री वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 51 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446T00449** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **VEERBHAN DULHANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KESHAVLAL DULHANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **विशाल ईदवानी** पिता/पति, श्री/श्रीमती **अशोक कुमार ईदवानी** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-9)

पुलिस थाना के पास, दुबे कॉलोनी, मोवा, रायपुर
E-mail ID - rmczone9@gmail.com

पत्र क्र. /33564/ न.पा.नि./जोन क्र.-9/2026
रायपुर, दिनांक 23-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33564
वार्ड का नाम- 32 - महर्षि वाल्मीकि वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 32 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR328T00259** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **GOVIND PAMWANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GOVARDHAN DAS PAMWANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **अवंतिका गौरहा** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पीयूष गौरहा** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/ संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-9
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)

Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-

नामांतरण प्रकरण क्र. 297 दिनांक 20.07.2026
वार्ड का नाम- कैलाश नगर वार्ड
वार्ड क्र. 21 वर्ष- 2025-26

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक 21 मांग **पंजी क्र. 759 युआईडी 22208** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **अलका ठाकुर / सुरेन्द्र ठाकुर** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **1. प्रज्ञा ठाकुर 2. प्रतीक्षा ठाकुर/सुरेन्द्र ठाकुर** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 15 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **04-08-2026** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)

मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र./33576/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2026
रायपुर, दिनांक 22-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33576
वार्ड का नाम-1 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 1 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801O00316** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **INDER KUMAR PANDEY** पिता/पति, श्री/श्रीमती **P. R PANDEY** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ACHHEYBAR NATH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KEDAR NATH** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती राजेश्वरी पटेल
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)

मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र./33541/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2026
रायपुर, दिनांक 22-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33541
वार्ड का नाम-19 - डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कालाम वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 19 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802A00081** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **BASANT BISEN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SUBHASH CHANDRA BISEN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. MOHRABATI SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SHRI BADRIPRASAD SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती राजेश्वरी पटेल
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय राजस्व निरीक्षक रायपुर- 10

आम-सूचना

जारी दिनांक-22/07/2026

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक **डी. सी. पी. एल इन्फ्राकॉन प्रा. लि. द्वारा डाय. पराग दोशी पिता श्री विपिन दोशी निवासी एम. आई जी. - 214 ब्लाक हिमालयन हाईट्स रायपुर छ.ग.** द्वारा आवेदित **ग्राम देवपुरी पटवारी हल्का नंबर 73 राजस्व निरीक्षक मण्डल - 10 रायपुर** में स्थित भूमि जिसका **खसरा नम्बर 123/1 123/2 123/3 124/2 रकबा... 0.0280, 0.0280, 0.0280, 0.0370 हे** का सीमांकन न्यायालय नायब/अतिरिक्त तहसीलदार, रायपुर के आदेश **दिनांक 25/05/2026** के परिपालन मे **दिनांक 31/07/2026** को **समय 12 बजे पश्चात** मेरे द्वारा किया जाना नियत है।

अत: उक्त सीमांकन मे जिस किसी व्यक्ति या संस्था को कोई दावा/आपत्ति प्रस्तुत करना हो तो वह उक्त तिथि मे पटवारी हल्का नम्बर 73 के **डुमरतराई** में स्थित कार्यालय मे मय दरतालेज सहित स्वंय अथवा वैध अभिभाषक के माध्यम से उपस्थित होकर प्रस्तुत कर सकते हैं। नियत तिथि के पश्चात् मेरे द्वारा किसी प्रकार की दावा / आपत्ति पर विचार किया जाना संभव नहीं है।

मुहर

राजस्व निरीक्षक
रायपुर - 10

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01, सिरपुर भवन, व्यवसायिक परिसर कबीर नगर, रायपुर

email Id- eocghbzone1@gmail.com

आम-सूचना

छत्तीसगढ गृह निर्माण मण्डल द्वारा - कोटा कालोनी रायपुर में निर्मित ए - टाईप भवन योजना अंतर्गत, दुकानों /भूखण्डों/भवनों में से भूखण्ड/भवन **क्रमांक ए - 97, श्री राजेन्द्र आचारी पिता स्व. श्री व्ही.पी. आचारी** को भाड़ाक्रय / पूर्णमूल्य आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा **दिनांक 07/03/1994** को विक्रय विलेख निष्पादित कर लिया गया।

आबंटी उक्त भवन के विक्रय हेतु **दिनांक 22/07/2026** को निष्पादित विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति प्रस्तुत कर भवन **श्री शिवशंकर राजपूत पिता शैलेन्द्र राजपूत** के नाम से विक्रय करने के लिए विक्रय अनुमति की मांग की हैं।

अत: किसी भी व्यक्ति शासकीय / अर्द्धशासकीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन के विक्रय के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आमसूचना प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर समक्ष उपस्थित होकर आपत्ति प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त आपत्ति मान्य नही की जायेंगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-01
कबीर नगर, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)

मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र./33475/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2026
रायपुर, दिनांक 22-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33475
वार्ड का नाम-19 - डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कालाम वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 19 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR802N00250** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **DASRATH NIRMALKAR S/O PURAN NIRMALKAR 2. SHAIL NIRMALKAR W/O DASRATH NIRMALKAR 3. PANKAJ NIRMLAKAR S/O DASRATH NIRMALKAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती .... के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **DASHRATH NIRMALKAR S/O LT. PURAN NIRMALKAR AND SMT. SHAIL NIRMALKAR W/O DASHRATH NIRMALKAR** पिता/पति, श्री/श्रीमती .... ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती राजेश्वरी पटेल
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)

मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र./33536/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2026
रायपुर, दिनांक 22-07-2026

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 33536
वार्ड का नाम-1 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 1 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801I00057** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **BAKSHISH SINGH BHAMRA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MAHANGA SINGH BHAMRA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **CHRISTIAN EVANGELISTIC ASSEMBLIES THROUGH-STATE PRESIDENT - MANOJ NAYAK S/O GAJIN NAYAK** पिता/पति, श्री/श्रीमती .... ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 15 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्रीमती राजेश्वरी पटेल
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(8)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

सूरजपुर

रायपुर, शुक्रवार 24 जुलाई 2026

पीएम श्री स्कूल में प्यासे नौनिहाल : पानी नहीं, बंद पड़े शौचालय; माध्यमिक शाला के लिए भी ढोना पड़ रहा पानी

सूरजपुर ब्यूरो(चांदनी बिहारपुर) दैनिक विश्व परिवार- देशभर में सरकारी स्कूलों को आधुनिक सुविधाओं से लैस करने के लिए संचालित पीएम श्री योजना के दावों के बीच सूरजपुर जिले के ओड़गी विकासखंड स्थित पीएम श्री प्राथमिक एवं माध्यमिक शाला महुली की तस्वीर पूरी तरह अलग नजर आ रही है। यहां पढ़ने वाले बच्चे आज भी पेयजल जैसी मूलभूत सुविधा से वंचित हैं। विद्यालय परिसर में पानी नहीं होने से छात्र-छात्राओं को पीने के पानी के लिए इधर-उधर भटकना पड़ रहा है। हालात ऐसे हैं कि पानी के अभाव में स्कूल के शौचालय भी उपयोग के लायक नहीं रह गए हैं, पानी जबकि मध्यान्ह भोजन तैयार करने के लिए भी रसोइयों को दूर से पानी लाना पड़ रहा है।

विद्यालय में अध्ययनरत बच्चों और अभिभावकों का कहना है कि पानी की

समस्या वर्षों पुरानी है, लेकिन अब तक इसका स्थायी समाधान नहीं किया गया। स्कूल परिसर में न तो अपना बोरवेल है और न ही नियमित जलापूर्ति की व्यवस्था। परिणामस्वरूप बच्चों को पढ़ाई के समय बार-बार पानी की तलाश में बाहर जाना पड़ता है, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो रही है।

ग्रामीणों के अनुसार, पहले आंगनबाड़ी केंद्र के पीछे से पाइपलाइन बिछाकर विद्यालय तक पानी पहुंचाने का प्रयास किया गया था। इस कार्य पर हजारों रुपये खर्च हुए, लेकिन पाइपलाइन बार-बार टूटती रही। हर बार मरम्मत और रिपेयरिंग के नाम पर सरकारी राशि खर्च होती रही, परंतु व्यवस्था कुछ ही दिनों में फिर ठप हो जाती है।

इसके बाद दूर स्थित सोलर ड्यूल पंप से पाइपलाइन जोड़कर पानी उपलब्ध कराने का प्रयास भी किया गया, लेकिन यह व्यवस्था भी सफल नहीं हो सकी। ग्रामीणों का आरोप है कि बार-बार पाइपलाइन सुधार पर सरकारी धन खर्च हो रहा है, लेकिन बच्चों को स्थायी पेयजल सुविधा आज तक नहीं मिल सकी।

पानी की कमी का सबसे अधिक असर विद्यालय की स्वच्छता व्यवस्था पर पड़ा है। शौचालयों में पानी नहीं होने से छात्र-छात्राएं उनका उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। वहीं मध्यान्ह भोजन बनाने वाली रसोइयों को प्रतिदिन दूर-दराज से पानी लाकर भोजन तैयार करना पड़ता है। इससे भोजन व्यवस्था और साफ-सफाई दोनों प्रभावित हो रहे हैं।

स्थानीय लोगों का कहना है कि पीएम श्री विद्यालय में स्मार्ट क्लास, डिजिटल शिक्षा और अन्य आधुनिक सुविधाओं की चर्चा होती है, लेकिन जब बच्चों को पीने का पानी तक उपलब्ध नहीं है, तब ऐसी योजनाओं का उद्देश्य अधूरा दिखाई देता है। स्कूल प्रबंधन समिति, ग्राम पंचायत, शिक्षक, अभिभावक और ग्रामीणों ने जिला प्रशासन एवं सूरजपुर कलेक्टर से विद्यालय परिसर में तत्काल नया बोरवेल (बोरिंग) कराने की मांग की है। उनका कहना है कि यदि स्कूल परिसर में बोरवेल स्थापित कर दिया जाए तो बच्चों को नियमित पेयजल मिलेगा, शौचालय चालू हो जाएंगे, मध्यान्ह भोजन बनाने में परेशानी नहीं होगी और बार-बार पाइपलाइन मरम्मत पर होने वाला सरकारी खर्च भी रुक जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

ब्लांक मुख्यालय प्रेमनगर एवं श्रीनगर में छात्र समुदाय के समर्थन में धरना

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और विपक्ष के नेता माननीय राहुल गांधी जी, श्रीमती प्रियंका गाँधी जी सहित सांसदों एवं वरिष्ठ नेताओं के गिरफ्तारी के विरोध मे प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर ब्लांक कांग्रेस कमेटी प्रेमनगर के तत्वाधान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पुतला दहन एवं एक दिवसीय विरोध प्रदर्शन किया गया. जिसमें उपस्थित कांग्रेस की वरिष्ठ नेता इस्माइल खान,ब्लॉक कांग्रेस कमेटी प्रेमनगर अध्यक्ष अरविन्द यादव अध्यक्ष युवा कांग्रेस रोहित कनौजे जिला कांग्रेस कमेटी सचिव असकरन गुप्ता जिला अध्यक्ष इंटक कांग्रेस दीपन मानिकपुरी पार्षद कमलेश्वर सिंह आदिवासी कांग्रेस उपाध्यक्ष नरेंद्र सिंह अर्मो उपाध्यक्ष युवा कांग्रेस राहुल सुनहरे भुवन्ति सीरदार ईश्वर सिंह नवल सिंह राजकुमार कुर्रे मोती लाल पावले चंद्रिका प्रसाद पति राम रामपाल सारथी पारस सारथी विजय महंत कुमान सिंह धर्मेंद्र प्रजापति राजा कुर्रे अभिषेक कुर्रे सरवन साहू करण सोनवानी दिनेश बंजारा रामप्यारे साहू रामनरेश सीरदारअमन कुमार सुखनंदन सिंह समय लाल एवं अन्य कांग्रेसी कार्यकर्ता उपस्थिति रहे।

कलेक्टर रेना जमील के मार्गदर्शन में दो दिवसीय फोटोग्राफी कार्यशाला का शुभारंभ

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-कलेक्टर श्रीमती रेना जमील के सफल मार्गदर्शन में जिला प्रशासन सूरजपुर एवं निकोन छत्तीसगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय फोटोग्राफी कार्यशाला का शुभारंभ आज जिला पंचायत सभाकक्ष में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री विजेंद्र सिंह पाटले उपस्थित रहे। कार्यशाला का उद्देश्य विद्यार्थियों में फोटोग्राफी के प्रति रुचि विकसित करना, आधुनिक कैमरा तकनीकों की जानकारी प्रदान करना तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति के नए अवसर उपलब्ध कराना है। इस अवसर पर प्रतिभागियों को फोटोग्राफी के मूलभूत सिद्धांतों, कैमरा संचालन, कंपोजिशन, प्रकाश व्यवस्था तथा व्यावहारिक तकनीकों की जानकारी विशेषज्ञों द्वारा प्रदान की जाएगी। कार्यशाला में शासकीय रेवती रमण स्नातकोत्तर महाविद्यालय सूरजपुर, कन्या महाविद्यालय सूरजपुर, पीएमश्री सेजस नवापारा सूरजपुर, कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय सूरजपुर, कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सूरजपुर तथा बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सूरजपुर के कुल 135 छात्र-छात्राएं प्रतिभागी के रूप में शामिल हुए हैं। कार्यशाला के सफल आयोजन में समग्र शिक्षा के डीएमसी श्री मनोज कुमार साहू, पर्यटन विभाग के नोडल अधिकारी डॉ. मोहन लाल साहू, प्रभारी प्राचार्य गर्ल्स कॉलेज सूरजपुर श्री बृजलाल साहू, सहायक प्राध्यापक श्री अनिल चक्रधारी, निकोन कंपनी के टीम मैनेजर श्री गौरव जैन, मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव श्री अनुग्रह पुरोहित, ट्रेनर श्री मोहित साहू तथा विभिन्न विद्यालयों के नोडल शिक्षकों की महत्वपूर्ण सहभागिता रही।

सैमसंग इंडिया ने लॉन्च की नई फोल्डेबल स्मार्टफोन सीरीज़

गुरुग्राम: सैमसंग ने अपने नए फोल्डेबल स्मार्टफोन गैलेक्सी ‘फोल्ड8, गैलेक्सी‘ फोल्ड8 अल्ट्रा और गैलेक्सी‘ फ्लिप8 की भारत में प्री-ऑर्डर बुकिंग शुरू करने की घोषणा की है। नई गैलेक्सी‘सीरीज़ सात पीढ़ियों के फोल्डेबल नवाचार पर आधारित है और गैलेक्सी एआई तथा जेमिनी इंटेलीजेंस से लैस है, जो उपयोगकर्ताओं को कम चरणों में कार्य पूरा करने में मदद करती है। साथ ही, यह पारदर्शिता, गोपनीयता और उपयोगकर्ता नियंत्रण को भी प्राथमिकता देती है। इस अवसर पर सैमसंग साउथवेस्ट एशिया के प्रेसिडेंट एवं सीईओ जे.बी. पार्क ने कहा, पिछली सात जेनरेशन्स में हमारे फोल्डेबल स्मार्टफोन्स को मिली शानदार प्रतिक्रिया इस श्रेणी में सैमसंग की अग्रणी भूमिका को मजबूत करती है। उपभोक्ता हमारे फोल्डेबल डिवाइसों को उनके आकर्षक डिज़ाइन और पर्सनलाइज्ड गैलेक्सी एआई अनुभव के लिए पसंद कर रहे हैं, जो उत्पादकता और रचनात्मकता को नई ऊंचाई देते हैं। अत्याधुनिक हार्डवेयर इंजीनियरिंग और मजबूत डिज़ाइन वाले ये स्मार्टफोन भारत में निर्मित हैं और इनके निर्माण में देश में मौजूद हमारी आरएंडडी क्षमताओं का पूरा समर्थन मिला है, जिससे हम उपभोक्ताओं की बदलती जरूरतों के अनुरूप नवाचार विकसित कर पा रहे हैं।

बस्तामुक्त विद्यालय रुनियाडीह में नेवता भोज कार्यक्रम आयोजित

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-क्षेत्र के प्रथम बस्तामुक्त विद्यालय शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला रुनियाडीह में राजेश कुमार अग्रवाल अध्यक्ष अलख सामाजिक गुणवत्ता मंच के सौजन्य से अपने भतीजे सौम्य कृष्ण अग्रवाल एवं नातिन अनाया अग्रवाल के जन्मदिन के अवसर पर नेवता भोज का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डीएमसी समग्र शिक्षा सूरजपुर मनोज कुमार साहू, डीपीओ साक्षर भारत डॉ. मोहनलाल साहू, क्षेत्र के जिला पंचायत सदस्य श्रीमती कलेश्वरी कुर्रे, पूर्व जनपद सदस्य बाबूलाल राजवाड़े, बाबूलाल यादव, डॉ. सुनील श्रीवास्तव प्रभारी चिकित्सा प्रकोष्ठ, लखन लाल कुर्रे एसईसीएल श्रमिक जन प्रतिनिधि, श्रीमती जयंती भगत, हेमराज सिंह सोनी, गोपाल राम, सरपंच श्रीमती सुमित्रा सिंह, एसएमसी अध्यक्ष श्रीमती कौशिल्या राजवाड़े, पूर्व एसएमसी अध्यक्ष श्रीमती एनवति राजवाड़े, देव चौधरी तथा यश प्रजापति उपस्थित रहे। संस्था प्रमुख सीमांचल त्रिपाठी द्वारा बताया गया कि आज विद्यालय में दर्ज

82 बच्चों में 80 बच्चे उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पहुंचे श्रीमती जयंती भगत द्वारा बच्चों के लिए आठ नग मुठिया साड़ी जनजातीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति हेतु संस्था के प्रधानमंत्री पायल राजवाड़े, सांस्कृतिक मंत्री कोमल सिंह, यूथ क्लब के अध्यक्ष वर्षा राजवाड़े, शिक्षा मंत्री खुशी सिंह, सरस्वती राजवाड़े, निशा राजवाड़े, साधना तथा दुर्गेश्वरी विश्वकर्मा को सौपा गया। संस्था द्वारा श्रीमती जयंती भगत तथा राजेश कुमार अग्रवाल का अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। अतिथियों द्वारा बच्चों संग नेवता भोज में पूड़ी, चावल, दाल फ्राई, आलू परवल की भुजिया, चना मसाला, पापड़, आचार तथा बालूशाही मिठाई का आनन्द लिया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में शांति सिंह, सुनीता, आराध्या, सुरेखा, देवांगन नेहा सिंह, वंदना, संस्था के शिक्षक रिजवान अंसारी, श्रीमती एम. टोप्पो, जन शिक्षक विजेंद्रलाल जायसवाल, मध्याह्न भोजन सहायिका श्रीमती सुमित्रा राजवाड़े तथा नान दईया एवं घरपति सिंह सक्रिय रहे।

जेएलआर इंडिया ने अश्योर्ड बायबैक प्रोग्राम और फाइनैंस के बेहतर विकल्पों के साथ लक्ज़री गाड़ी की ओनरशिप को बनाया फ्लेक्सिबल

मुंबई: जेएलआर इंडिया ने आज अपने अश्योर्ड बायबैक प्रोग्राम और बेहतर फाइनैंसिंग समाधानों को पेश करने की घोषणा की है। इन्हें देश भर में ग्राहकों के लिए रेंज रोवर, डिफेंडर और डिस्कवरी गाड़ियों की ओनरशिप को ज़्यादा सहज, अनुमान लगाने योग्य और सुविधाजनक बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। जेएलआर का यह प्रोग्राम खासतौर पर भारतीय मार्केट के लिए तैयार किया है, जिसमें पहले से तय फ्यूचर वैल्यू और फाइनैंस के आकर्षक विकल्प शामिल हैं, इससे ग्राहक के लिए वाहन की खरीद का पूरा अनुभव सहज और ज़्यादा निश्चित बन जाता है। इस प्रोग्राम के तहत अब योग्य ग्राहक ओनरशिप की प्रत्यास्थ अवधि के साथ एक्स-शोरूम कीमत के 55 प्रतिशत तक न्यूनतम अश्योर्ड बायबैक वैल्यू का लाभ उठा सकते हैं- ये फायदे माइलेज की तय सीमा के भीतर, मॉडल की एलिजिबिलिटी और रीटेलर द्वारा पहले से निर्धारित नियमों और शर्तों पर निर्भर करेंगे। अश्योर्ड बायबैक प्रोग्राम लग्ज़री गाड़ी खरीदने वालों की सबसे मुख्य परेशानियों में से एक - यानि फ्यूचर वैल्यू का समाधान करता है। ओनरशिप की शुरूआत में ही गाड़ी की न्यूनतम गारंटीड वैल्यू तय होने से ग्राहक का भरोसा बढ़ता है और साथ ही अगर वे भविष्य में अगली गाड़ी खरीदने या अपग्रेड करने की योजना बना रहे हैं, तो वे पहले से फाइनैंस से जुड़े पहलुओं का अनुमान लगा सकते हैं। इस अवसर पर जेएलआर इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री राजन अम्बा ने कहा, ''अश्योर्ड बायबैक प्रोग्राम वाहन की फ्यूचर वैल्यू की गारंटी देकर लक्ज़री गाड़ी की खरीद के अनुभव को ज़्यादा भरोसेमंद बना देता है। इसके अलावा, एक्सक्लुज़िव फाइनैंसिंग समाधान इस प्रोग्राम को और बेहतर बनाते हैं।

सैमसंग 'सॉल्व फ़ॉर टुमॉरो' ने भारत के 135 शहरों में 'डिज़ाइन थिंकिंग' पहुँचाकर अपने पाँचवें साल का जश्न मनाया

अपने मुख्य ष्टस्क्र प्रोग्राम 'सैमसंग सॉल्व फॉर टुमॉरो' के पांचवें एडिशन के तहत, सैमसंग इंडिया ने देश भर के 135 शहरों में अपनी 'डिजाइन थिंकिंग वर्कशॉप' आयोजित की हैं, जिससे युवाओं के लिए भारत का सबसे बड़ा ग्रासरूट इनोवेशन प्लेटफॉर्म तैयार हुआ है। 'सैमसंग सॉल्व फॉर टुमॉरो' एक देशव्यापी इनोवेशन और एजुकेशन कॉम्पिटिशन है। यह 14 से 22 साल के युवाओं को अपने समुदायों की अहम चुनौतियों की पहचान करने और डिज़ाइन थिंकिंग, मेंटरशिप और इनक्यूबेशन के ज़रिए टेक्नोलॉजी-बेस्ड समाधान विकसित करने के लिए सशक्त बनाता है। समय के साथ, यह प्रोग्राम भारत की अगली पीढ़ी के इनोवेटर्स, एंटरप्रेन्योर्स और सोशल चेंजमेकर्स के लिए एक लॉन्चपैड बन गया है। इस साल, सैमसंग ने 184 'डिज़ाइन थिंकिंग वर्कशॉप' आयोजित कीं, जिनमें जम्मू-कश्मीर से लेकर तमिलनाडु और गुजरात से लेकर त्रिपुरा तक के स्कूलों, कॉलेजों और यूनिवर्सिटीज़ के हज़ारों छात्र शामिल हुए। इन वर्कशॉप्स में प्रतिभागियों को 'ह्यूमन-सेंटर्ड डिज़ाइन थिंकिंग' (लोगों की ज़रूरतों पर आधारित डिज़ाइन सोच) से परिचित कराया गया, ताकि वे टेक्नोलॉजी पर आधारित ऐसे समाधान बनाने से पहले असल दुनिया की समस्याओं को समझ सकें, जिनका समाज पर सार्थक प्रभाव पड़े।

छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफकॉमर्स एवं स्टेट बैंक ऑफ़इंडिया द्वारा बिश्रामपुर में जरूरतमंद व्यापारियों के बीच पांच, दस बीस के सिक्कों का किया गया वितरण

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफ कॉमर्स एवं स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, बिश्रामपुर के संयुक्त तत्वावधान में आज बस स्टैंड, बिश्रामपुर में व्यापारियों की सुविधा हेतु ?5, ?10 एवं ?20 के सिक्कों का वितरण किया गया। इस पहल का उद्देश्य स्थानीय व्यापारियों को दैनिक लेन-देन में पर्याप्त मात्रा में छोटे मूल्यवर्ग के सिक्के उपलब्ध कराना था।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफ कॉमर्स के प्रदेश उपाध्यक्ष अशोक अग्रवाल उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि व्यापारियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार के आयोजन समय-समय पर किए जाते रहेंगे, जिससे व्यापारियों को खुले पैसों की समस्या का सामना न करना पड़े।

इस अवसर पर जतिन तायल, विजय गोयल (कालू), प्रदीप गर्ग, नितिन गोयल, सावन गोयल

सहित बाजार के अनेक व्यापारी उपस्थित रहे और बड़ी संख्या में व्यापारियों ने अपनी आवश्यकता अनुसार 5, 10 एवं ?20 के सिक्के प्राप्त किए।

व्यापारी बंधुओं ने इस उपयोगी पहल के लिए छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफ कॉमर्स एवं स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, बिश्रामपुर का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी ऐसे आयोजन नियमित रूप से आयोजित करने की अपेक्षा व्यक्त की।

तनाव प्रबंधन एवं आत्महत्या रोकथाम हेतु कार्यशाला का किया गया आयोजन

जवानों को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति किया जागरूक

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-कलेक्टर श्रीमती रेना जमील के निर्देश के अनुपालन एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. के. डी. पैकरा के मार्गदर्शन में तनाव प्रबंधन एवं आत्महत्या रोकथाम कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य सुरक्षा बल के जवानों को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना, कार्यस्थल के तनाव से प्रभावी ढंग से निपटने के उपाय बताना तथा आत्महत्या की रोकथाम हेतु समय रहते पहचान एवं सहायता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना था।

इसके साथ ही कार्यक्रम में जिला चिकित्सालय की मानसिक

स्वास्थ्य की टीम से क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट श्री सचिन मातुरकर एवं साइकेट्रिक सोशल वर्कर प्रियंका मंडल ने जवानों को मानसिक तनाव के लक्षण, कारण एवं तनाव से उत्पन्न होने वाले शारीरिक एवं मानसिक प्रभाव को बताते हुए तनाव प्रबंधन हेतु सकारात्मक सोच, भावनात्मक संतुलन, प्रभावी संवाद, समस्या-समाधान कौशल तथा तनाव प्रबंधन की व्यावहारिक तकनीकों की विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम की अगली कड़ी में आत्महत्या के चेतावनी संकेतों, जोखिम कारकों एवं समय पर परामर्श एवं उपचार के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा की गई। कार्यशाला को अधिक प्रभावी एवं सहभागितापूर्ण बनाने के लिए गहरी श्वास, रिलैक्सेशन एक्सरसाइज, माइंडफुलनेस तथा समूह गतिविधियों का भी आयोजन किया गया, जिसमें जवानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इन अभ्यासों के माध्यम से उन्हें दैनिक जीवन एवं ड्यूटी के दौरान तनाव को नियंत्रित करने के सरल एवं प्रभावी उपाय सिखाए गए।

इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों ने राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि सुरक्षा बलों के जवानों का मानसिक रूप से स्वस्थ एवं सशक्त होना उनकी कार्यक्षमता, अनुशासन तथा व्यक्तिगत जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने भविष्य में भी ऐसे जागरूकता कार्यक्रमों के नियमित आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम के अंत में जवानों ने मानसिक स्वास्थ्य संबंधी अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया तथा तनावमुक्त एवं सकारात्मक जीवनशैली अपनाने का संकल्प लिया। राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत भविष्य में भी समाज के विभिन्न वर्गों के लिए ऐसे जन-जागरूकता एवं क्षमता-विकास कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहेंगे। कार्यक्रम में 10वीं वाहिनी छत्तीसगढ़ सेना बल सेनानी सूरजपुर के असिस्टेंट कमांडेंट श्री सुधीर कुजूर, श्री बी. पी. सिंह, श्रीमती कविता ठाकुर, हेड कांस्टेबल श्री अशोक साहू एवं अन्य अधिकारी कर्मचारीगण उपस्थित थे।

संपादकीय

लाठी और आंसू गैस

'कॉकरोचों' को थका देने या उनके आंदोलन में पाकिस्तान या चीन के हाथ जैसे नैरेटिव्स के प्रचार से असली सवाल खत्म नहीं होंगे। बल्कि ऐसी सोच से ये प्रश्न व्यवस्था से मोहभंग का कारण बन सकते हैं। पेपर लीक और शिक्षा व्यवस्था की खामियों के लिए जवाबदेही की मांग करने राजधानी आए छात्र-नौजवानों का बड़ा हिस्सा यह देखकर भौंचक था कि जो पुलिस उनके लिए है, वही उन पर बेरहमी से लाठी क्यों चला रही है? उनकी बात सुनने के बजाय उन पर आंसू गैस के गोले क्यों दागे जा रहे हैं? किशोर वय छात्र-छात्राएं इस सवाल में उलझे नजर आए कि लोकतंत्र में अपनी बात कहने से उन्हें क्यों रोका जा रहा है? इतना सब कुछ हो चुकने के बावजूद किसी को जवाबदेह क्यों नहीं बनाया गया है? उन्हें यह देखकर भी हैरत हुई कि जब राज्यसभा में विपक्ष के नेता ने उनकी बात और उन पर पुलिस कार्रवाई का मुद्दा उठाने की कोशिश की, तो मिनट भर के अंदर सदन को ही स्थगित कर दिया गया। इससे सवाल उठा कि संसद छात्र-नौजवान या जन समुदाय के किसी अन्य हिस्से को चिंताओं को व्यक्त और उन पर विचार-विमर्श का मंच अगर नहीं रह गई है, तो फिर पाठ्यपुस्तकों के जरिए प्रातिनिधिक लोकतंत्र के पढ़ाए गए तमाम गुण क्या महज किताबी हैं? अलग-अलग राज्यों के छोटे-बड़े शहरों में दिल्ली की घटनाओं के खिलाफ हुए स्वत:स्फूर्त विरोध प्रदर्शनों से अंदाजा लगाया जा सकता है कि ये सवाल दूर-दराज तक पहुंच गए हैं। 'कॉकरोचों' को थका देने या उनके आंदोलन में पाकिस्तान या चीन के हाथ जैसे नैरेटिव्स के प्रचार से ये सवाल खत्म नहीं होंगे। बल्कि ऐसी सोच से ये प्रश्न व्यवस्था से गहरे मोहभंग का कारण बन सकते हैं। इसलिए सत्ता पक्ष को जन असंतोष से निपटने के पुराने तौर-तरीकों से बाहर निकलना चाहिए। दिल्ली में युवाओं की जैसी अप्रत्याशित भीड़ उमड़ी, वह संकेत है कि वो तौर-तरीके अब तेजी से असर खो रहे हैं। इसलिए असल सवालों से आंख मिलाने की जरूरत है। शिक्षा, अर्थव्यवस्था, एवं सामाजिक माहौल की परत-दर-परत दरकती ईंटों ने वो हालत पैदा की है, जिसमें छात्र-नौजवानों के सामने अवसरहीनता की विकट स्थिति खड़ी हुई है और उन्हें अपना भविष्य अंधकारमय लगने लगा है। उसी से उपजी हताशा का प्रतीकात्मक विस्फोट दिल्ली की सड़कों पर हुआ- इसे समझने की जरूरत है।

ज्ञान, बुद्धि और विवेक: जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति

ज्ञान की नदी, बुद्धि का प्रवाह और विवेक का सागर

तेजबहादुर सिंह भुवाल

आज दुनिया अभूतपूर्व परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। विज्ञान, तकनीक और संचार के क्षेत्र में हो रहे तेज़ विकास ने मनुष्य के जीवन को सुविधाजनक बना दिया है। एक क्लिक पर अनगिनत जानकारियाँ उपलब्ध हैं, लेकिन क्या केवल जानकारी का होना ही मनुष्य को महान बना देता है? इसका उत्तर स्पष्ट है—नहीं। जीवन को सार्थक बनाने के लिए ज्ञान के साथ बुद्धि और विवेक का होना अनिवार्य है। यही तीनों गुण व्यक्ति के चरित्र, व्यक्तित्व और भविष्य की वास्तविक पहचान बनते हैं। ज्ञान वह प्रकाश है जो जीवन के अंधकार को दूर करता है। यह हमें शिक्षा, अनुभव, अध्ययन, प्रकृति और समाज से प्राप्त होता है। ज्ञान मनुष्य को जागरूक बनाता है, उसकी सोच का विस्तार करता है और उसे नई संभावनाओं से परिचित कराता है। किंतु केवल ज्ञान अर्जित कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। यदि ज्ञान व्यवहार में न उतरे, तो वह पुस्तकों के पन्नों तक ही सीमित रह जाता है। ज्ञान को सार्थक बनाने का कार्य बुद्धि करती है। बुद्धि वह क्षमता है, जो सही समय पर सही निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करती है। जीवन में अनेक अवसर ऐसे आते हैं, जब व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। उस समय केवल जानकारी नहीं, बल्कि सूझ-बूझ और दूरदर्शिता काम आती है। बुद्धिमान व्यक्ति समस्याओं से घबराता नहीं, बल्कि उनका समाधान खोजता है। वह परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढालना जानता है और असफलताओं को भी सीखने का अवसर बना लेता है। इन दोनों से भी श्रेष्ठ स्थान विवेक का है। विवेक वह आंतरिक चेतना है, जो हमें सही और गलत, न्याय और अन्याय, सत्य और असत्य के बीच अंतर करना सिखाती है। विवेक ही मनुष्य को नैतिक बनाता है। जब ज्ञान और बुद्धि के साथ विवेक जुड़ जाता है, तब व्यक्ति अपने निर्णय केवल स्वार्थ के आधार पर नहीं, बल्कि समाज और मानवता के हित को ध्यान में रखकर लेता है। यही गुण एक सामान्य व्यक्ति को असाधारण बना देता है। वर्तमान समय में ज्ञान का विस्फोट हुआ है, लेकिन विवेक का संकट भी उतना ही गहरा दिखाई देता है। सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यमों ने सूचनाओं का अंबार खड़ा कर दिया है। बिना सत्यापन के खबरें साझा करना, अफवाहों पर विश्वास करना और बिना सोचे-समझे प्रतिक्रिया देना इस बात का संकेत है कि ज्ञान उपलब्ध है, पर विवेक का उपयोग कम हो रहा है। इसलिए आज आवश्यकता केवल शिक्षित लोगों की नहीं, बल्कि विवेकशील नागरिकों की है। हमारे परिवार, विद्यालय और समाज की जिम्मेदारी है कि वे नई पीढ़ी को केवल प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए नहीं, बल्कि बहुमूल्य जीवन के लिए तैयार करें। बच्चों में पढ़ने की आदत, प्रश्न पूछने का साहस, तर्क करने की क्षमता और नैतिक मूल्यों का विकास ही उन्हें सच्चे अर्थों में शिक्षित बनाएगा। चरित्र के बिना ज्ञान विनाश का कारण बन सकता है, जबकि विवेकयुक्त ज्ञान समाज के विकास का आधार बनता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि महान व्यक्तियों की पहचान केवल उनके ज्ञान से नहीं, बल्कि उनके विवेकपूर्ण निर्णयों से बनी। उन्होंने अपने ज्ञान और बुद्धि का उपयोग मानवता के कल्याण के लिए किया। यही कारण है कि उनका जीवन आज भी प्रेरणा का स्रोत है। ज्ञान हमें सीखने की प्रेरणा देता है, बुद्धि हमें सोचने की क्षमता प्रदान करती है और विवेक हमें सही मार्ग पर चलने की शक्ति देता है। यदि इन तीनों का संतुलित विकास हो जाए, तो व्यक्ति न केवल अपने जीवन में सफलता प्राप्त करता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि हम केवल ज्ञानवान बनने का प्रयास न करें, बल्कि बुद्धिमान और विवेकशील भी बनें। यही जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि और सच्ची संपत्ति है। महाभारत में महर्षि वेदव्यास ने कहा है कि सभी प्राणियों में मनुष्य सबसे श्रेष्ठ है। इसका कारण उसकी शक्ति, ज्ञान या बुद्धि नहीं, बल्कि उसका विवेक है। विवेक ही मनुष्य को सही और गलत, उचित और अनुचित का निर्णय लेने की क्षमता देता है। यही गुण उसे अन्य प्राणियों से अलग और श्रेष्ठ बनाता है।आज जब विवेक का स्थान स्वार्थ ने ले लिया है, तब समाज में अपराध, नशाखोरी, मिलावट, भ्रष्टाचार, धोखाधड़ी, हिंसा, तनाव और आपसी वैमनस्य जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। इन बुराइयों ने मनुष्य को सुख और शांति से दूर कर दिया है। भौतिक सुविधाएँ बढ़ने के बावजूद मानसिक संतोष और आत्मिक शांति कम होती जा रही है। मनुष्य एक सामाजिक और जिम्मेदार प्राणी है। उसकी श्रेष्ठता तभी सार्थक है, जब वह अपने विवेक का सही उपयोग करे। विवेक ही वह प्रकाश है, जो हमें सही राह दिखाता है और सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय तथा अच्छे-बुरे में अंतर करना सिखाता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति विवेकपूर्ण जीवन अपनाए, तो न केवल उसका अपना जीवन सुखी होगा, बल्कि समाज भी अधिक संवेदनशील, शांतिपूर्ण और मानवीय बनेगा। जीवन की वास्तविक सफलता केवल अधिक जानने में नहीं, बल्कि सही समझने और सही कार्य करने में है। ज्ञान हमें जानकारी देता है, बुद्धि उसे समझने की क्षमता देती है और विवेक उस समझ को मानवता, नैतिकता और लोककल्याण की दिशा में ले जाता है। जब ज्ञान, बुद्धि और विवेक एक साथ जीवन में उतरते हैं, तभी व्यक्ति केवल सफल नहीं, बल्कि आदर्श और प्रेरणास्रोत भी बनता है। यही वह मार्ग है जो एक सशक्त समाज, जागरूक नागरिक और विकसित राष्ट्र की नींव रखता है।

आलेख

आगे कुँआ, पीछे मोदी

शंकर शरण

बेचारे हिन्दू दोहरी चोट झेल रहे हैं — संघ-परिवार का विश्वासघात और ब्लैकमेलिंग। क्या इस से आगे कोई फर्क पड़ेगा? नहीं, राजा बाबू ने सब प्रबंध कर लिया है। कहीं कोई छिद्र नहीं छोड़ा। चाहे संवैधानिक संस्थाओं, रेफरियों पर धब्बा लगता रहे। लिहाजा चुनावी फुटबॉल का नेशनल कप वही जीतते रहेंगे। बाकी इंडिया बस वाचता रहेगा! यह सब समाज को खोखला करते जाने की कीमत पर। बस कप हाथ में रहे, चाहे वास्तविक खेल केवल कागजी हो जाए।   एक अर्थ में यह संघ-परिवार का ही तर्क है। तेईस साल पहले, 2003 में इसे 'टीना' (ञ्जढ्ढ) कहा गया था — देयर इज नो अल्टरनेटिव — यानी, भाजपा का कोई विकल्प नहीं है। इसलिए, ऐ देशवासियो, भाजपा को समर्थन दो! क्योंकि और किसे दोगे? कांग्रेस नेता को तो बोलना भी नहीं आता, कागज देख-देख पढ़ती है। बल्कि, जब तक यह बेचारी कांग्रेस की नेता है — तब तक भाजपा को चिन्ता की भी जरूरत नहीं! कौन 'इंडिया शाइनिंग' कर देने वाली भाजपा के बदले उस अटपटी कांग्रेस नेता को समर्थन देगा! उक्त दलील 2004 के आरंभ तक इतनी दुहराई जाती रही थी, कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने उस वर्ष चुनाव से पहले कहा ञ्चचुनाव में क्या होना है; कोई कांप्टीशन ही नहीं है! तब से भाजपा नेता काफी बदल गये हैं। कुछ मामलों में अधिक होशियार, कुछ मामलों में और माशाअल्लाह। अगला चुनाव जीतने वाली सब तकनीकी कमियाँ इन्होंने दूर कर ली हैं, जिन पर किसी का ध्यान भी नहीं गया था। जिस में मुख्य यह कि मैच जीतने का सब से सुरक्षित तरीका है कि सामने कोई टीम ही न हो। यानी, सामने टीम न बनने दो! प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ियों में किसी को लुभा कर, किसी को डरा कर, किसी को फँसा कर, उस टीम से दूर रखो जो चुनौती दे सकती हो। अपनी टीम में भी कैप्टन बनने योग्य खिलाड़ियों को बाहर कर दो। बस, घुमा-फिरा कर वह वातावरण बनाना- जिसे 'टीना' कह लीजिए — कि भई और है कौन जिसे समर्थन दोगे! दूसरी ओर, माशाअल्लाह यह कि दस वर्ष पहले संघ-भाजपाइयों द्वारा जो ऊँची-ऊँची उपलब्धि की बात कही जाती थी, अब उन में किसी का नाम तक नहीं लिया जाता। भ्रष्टाचार-मुक्ति, स्वदेशी आर्थिकी, दुनिया में प्रभाव, चीन को झुकाना, और — एक आकस्मिक नया लक्ष्य- 'कांग्रेस मुक्त भारत' और 'माँ-बेटे को जेल पहुँचाना' — यह सब अब भक्त भी नहीं दुहराते। पूरे देश ने देखा कि चीन कहाँ है, और अपने राम क्या हैं। बगल बंगलादेश में हिन्दुओं का कत्ल, अपमान, मंदिर-ध्वंस होता रहा है — और अपने राजा के मुँह से एक शब्द तक नहीं निकला। जबकि कांग्रेस राज में बंगलादेश के हिन्दुओं के लिए संघ-परिवार यहाँ सरकार से दर्जन भर माँगे करता था। उस में संयुक्त राष्ट्र में मुद्दा उठाना भी था! यह उदाहरण है कि सारी बातें हवाबाजी थी। इसीलिए उन के कार्यकर्ता भी अब चुप हैं। सब जान चुके कि इन तिलों में तेल नहीं। कुछ विषयों में स्थिति पहले से बदतर हुई है। शिक्षा क्षेत्र इस का खुला उदाहरण है। विशिष्ट संस्थानों की स्वायत्तता भी छिन गई है। विद्या, विद्यार्थी, अध्यापक, स्नातक, सर्टिफिकेट या अवार्ड की गुणवत्ता का जिम्मेदार कोई नहीं है। महत्वपूर्ण अकादमियों में भी विद्वानों के स्थान पर मुंशी बिठा दिये गये हैं। ताकि अपनी टीम की जयकार करने, जुमले दोहराने वालों की संख्या बढ़े। बस। शिक्षा का जो हो, कुर्सी अपने हाथ रहे। यह फाउल खेलने जैसा है। पर उस से क्या, कैसे भी केवल चुनावी कप जीतते रहना है! यह दूरघातक स्थिति है, जो अनेक संघ-भाजपाई भी मानते हैं। पर कहते हैं- क्या करें? यह मानसिक बदहाली इतनी व्यापक है कि किसी नीति, घोषणा, चुप्पी, बेढब स्थिति, आदि की आलोचना पर केवल यही कहते हैं- 'भाजपा के हारने से आप को क्या मिलेगा?' चाहे अगले चुनाव में चार साल बाकी हो — पर उन के पास चुनाव छोड़ कोई विचार नहीं रह गया है। बारहों महीने उन्हें यही चिन्ता है। सो, अकेला लेखक भी यदि आलोचना करे तो वह चुनाव में हराने के लिए कर रहा है! अन्य कारण हो नहीं सकता। किसी को नीति सुधार या नेतृत्व परिवर्तन जैसी कोई बात नहीं सूझती कि वह भी विचारणीय हो सकती है। जबकि वह लोकतंत्र में सब से सहज विचार है। ब्रिटेन में 2016 से 2022 के छ: वर्षों में एक ही सत्ताधारी दल के चार प्रधानमंत्रियों ने स्वेच्छा से पद छोड़ दिया, सिर्फ यह देखकर कि उन की कोई नीति विफल रही या उन की लोकप्रियता कम हो गई। उन्हें पद छोड़ने की विवशता न थी! किन्तु उन्होंने अपने दल के अन्य नेता के लिए स्वयं स्थान छोड़ दिया।

सोनम वांगचुक और गणतंत्र की नैतिक परीक्षा

सतीश झा

सोनम वांगचुक का आंदोलन एक प्रश्नपत्र से आगे बढ़ जाता है। वे केवल परीक्षा प्रणाली की जवाबदेही नहीं माँग रहे। वे उस सोच पर प्रश्न उठा रहे हैं, जिसने शिक्षा को छँटनी की मशीन बना दिया है। उनके भीतर छिपा प्रश्न कहीं बड़ा है—क्या भारत अपने युवाओं का भविष्य बना रहा है, या केवल उनका क्रम तय कर रहा है? यही प्रश्न उनके पूरे सार्वजनिक जीवन को समझने की कुंजी भी है। लोकतंत्र की सबसे बड़ी विफलता तब नहीं होती, जब सरकार कोई गलत फैसला ले। सरकारें गलतियाँ करती हैं और उन्हें सुधारने का अवसर भी होता है। असली विफलता तब होती है, जब किसी नागरिक को अपनी बात सुनाने के लिए अपने शरीर को ही आख़िरी तर्क बनाना पड़े। किसी भी गणतंत्र में ऐसा नहीं होना चाहिए कि सत्ता किसी नागरिक की बात तब सुने, जब डॉक्टर चेतावनी दे चुके हों, अदालत हस्तक्षेप कर चुकी हो और उसका शरीर जवाब देने लगा हो। राज्य के भीतर कहीं न कहीं ऐसा दरवाज़ा अवश्य होना चाहिए, जहाँ किसी नागरिक की गंभीर और सार्वजनिक महत्व की शिकायत इसलिए सुनी जाए कि वह न्यायसंगत है, इसलिए नहीं कि वह मरने के कगार पर पहुँच गया है। 18 जुलाई 2026 को सोनम वांगचुक को दिल्ली के एक सरकारी अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा। इक्कीस दिन के उपवास ने उनके शरीर को बुरी तरह तोड़ दिया था। उन्होंने 28 जून को आमरण अनशन शुरू किया था। उनका संघर्ष किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं था। वे उन लाखों युवाओं के पक्ष में खड़े थे, जिनका विश्वास प्रश्नपत्र लीक और प्रतियोगी परीक्षाओं की अव्यवस्था ने तोड़ दिया। दिल्ली हाईकोर्ट को भी उनके स्वास्थ्य की निगरानी का निर्देश देना पड़ा। एक ऐसा प्रश्न, जिसका उत्तर लोकतांत्रिक संवाद से दिया जाना चाहिए था, धीरे-धीरे एक नागरिक की शारीरिक सहनशक्ति और राज्य की संवेदनशीलता की परीक्षा बन गया। पहली नज़र में यह विवाद केवल प्रश्नपत्र लीक का दिखाई देता है। परीक्षा रद्द हुई, अनियमितताओं के आरोप लगे, जवाबदेही की माँग उठी और शिक्षा मंत्री के इस्तीफे तक की आवाज़ पहुँची। यह सब गंभीर है, क्योंकि प्रश्नपत्र लीक केवल परीक्षा में धांधली नहीं है। यह उस भरोसे की हत्या है, जिसके सहारे करोड़ों युवा वर्षों तक तैयारी करते हैं। राज्य उनसे वादा करता है कि मेहनत और योग्यता का निष्पक्ष मूल्यांकन होगा। प्रश्नपत्र लीक उसी वादे का विश्वासघात है।

लेकिन यदि हम यहीं रुक जाएँ, तो सबसे बड़ा प्रश्न छूट जाएगा।

मान लीजिए भारत की हर परीक्षा पूरी तरह निष्पक्ष हो जाए। कहीं कोई प्रश्नपत्र लीक न हो, कोई नकल न हो, कोई भ्रष्टाचार न हो। क्या तब हमारी शिक्षा व्यवस्था सफल मानी जाएगी?

उत्तर शायद फिर भी 'नहीं' होगा।

क्योंकि परीक्षा और शिक्षा एक ही चीज़ नहीं हैं।

परीक्षा चुनती है, शिक्षा बनाती है। परीक्षा यह तय करती है कि सौ उम्मीदवारों में एक कौन आगे जाएगा। शिक्षा का दायित्व यह है कि सौ में सौ अपनी पूरी क्षमता तक पहुँच सकें। भारत ने इन दोनों के बीच का अंतर धीरे-धीरे भुला दिया है। हमने शिक्षा को प्रतियोगी परीक्षा का पर्याय बना दिया है। हर समस्या का समाधान हमें परीक्षा सुधार में दिखाई देता है—सुरक्षा बढ़ाइए, कैमरे लगाइए, डिजिटल निगरानी कीजिए, प्रश्नपत्र और सुरक्षित कर दीजिए। यह सब आवश्यक है, लेकिन पर्याप्त नहीं।

असल प्रश्न यह है कि बाकी निन्यानवे युवाओं का क्या होगा?

आज अधिकांश प्रतियोगी परीक्षाएँ ज्ञान का उत्सव नहीं, अवसरों की कमी का प्रबंधन बन गई हैं। जब एक सीट के लिए हजारों उम्मीदवार खड़े हों, तो परीक्षा योग्यता जितनी नहीं, दुर्लभ अवसरों की चौकीदारी उतनी करती है। वह कुछ लोगों को सफलता का प्रमाणपत्र देती है और बाकी लाखों को असफलता का बोझ। फिर व्यवस्था बड़ी सहजता से कह देती है कि दूसरा उम्मीदवार अधिक योग्य था। बहुत कम लोग यह पूछते हैं कि सौ योग्य युवाओं के लिए अवसर केवल एक ही क्यों था। धीरे-धीरे व्यवस्था की विफलता व्यक्ति की विफलता में बदल दी जाती है। असफल छात्र से कहा जाता है कि वह और मेहनत करे, बेहतर कोचिंग ले, एक बार फिर प्रयास करे। लेकिन राज्य से यह नहीं पूछा जाता कि उसने पर्याप्त अवसर क्यों नहीं बनाए। शिक्षा का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को सक्षम बनाना है; प्रतियोगी परीक्षा का उद्देश्य उनमें से कुछ को अलग कर देना। यही दोनों के बीच का सबसे बुनियादी अंतर है। यहीं से सोनम वांगचुक का आंदोलन एक प्रश्नपत्र से आगे बढ़ जाता है। वे केवल परीक्षा प्रणाली की जवाबदेही नहीं माँग रहे। वे उस सोच पर प्रश्न उठा रहे हैं, जिसने शिक्षा को छँटनी की मशीन बना दिया है। उनके भीतर छिपा प्रश्न कहीं बड़ा है—क्या भारत अपने युवाओं का भविष्य बना रहा है, या केवल उनका क्रम तय कर रहा है?

यही प्रश्न उनके पूरे सार्वजनिक जीवन को समझने की कुंजी भी है।

सोनम वांगचुक ने अपनी यात्रा विरोध से नहीं, निर्माण से शुरू की। मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई के बाद उन्होंने 1988 में लद्दाख में स्श्वष्टस्ल्रु की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें लगा कि वहाँ के बच्चे प्रतिभा के अभाव में नहीं, बल्कि ऐसी शिक्षा व्यवस्था के कारण असफल घोषित किए जा रहे हैं, जो उनकी भाषा, उनके भूगोल और उनके जीवन से बिल्कुल अनजान है। बाद में उन्होंने जल संरक्षण, निष्क्रिय सौर ऊर्जा, टिकाऊ निर्माण और आइस स्तूप जैसी तकनीकों पर काम किया। उनका तरीका हमेशा एक जैसा रहा—पहले समस्या को समझो, फिर उसका समाधान विकसित करो और अंत में स्वयं उसकी जिम्मेदारी उठाओ। इसी काम ने उन्हें 2018 का रैमन मैग्सेसे पुरस्कार दिलाया। यही कारण है कि सोनम वांगचुक का नैतिक प्रभाव केवल इसलिए नहीं है कि वे सरकार की आलोचना करते हैं। भारत में सरकारों की आलोचना करने वालों की कमी नहीं है। उनका महत्व इसलिए है कि उन्होंने पहले काम किया, फिर बोलना शुरू किया। शिक्षा, पर्यावरण, स्थानीय समाज और लोकतांत्रिक जवाबदेही—पहली नज़र में ये अलग-अलग विषय लगते हैं, लेकिन इनके पीछे एक ही विचार काम करता है—विकास मनुष्य के लिए होना चाहिए, मनुष्य विकास के लिए नहीं। इसीलिए उनके हर विचार से सहमत होना आवश्यक नहीं, लेकिन उन्हें गंभीरता से सुनना आवश्यक है। लोकतंत्र में नैतिक अधिकार पद, प्रसिद्धि या लोकप्रियता से नहीं मिलता। वह जीवन भर किए गए काम से अर्जित होता है।

रहने लायक शहरों की रैंकिंग से शर्मसार देश

योगेंद्र योगी

केंद्र सरकार 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की बात करती है। देश को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का सपना दिखाया जा रहा है। विकसित भारत की इमारत उस बुनियाद पर खड़ी की जा रही है जो हर मानसून में हिल जाती है। क्या अब समय नहीं आ गया है कि विकास के दावों से पहले शहरों की जल निकासी व्यवस्था, निर्माण की गुणवत्ता, नगर नियोजन और प्रशासनिक जवाबदेही को राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाया जाए? लेकिन क्या हर मॉनसून हमारे इन सभी दावों की वास्तविकता सामने नहीं रख देता? क्या विकसित भारत केवल बुलेट ट्रेन, एक्सप्रेस वे और गगनचुंबी इमारतों से बनेगा? या फिर उसकी पहचान ऐसी मजबूत बुनियादी व्यवस्था से होगी जो हर मौसम में नागरिकों को सुरक्षित और सुगम जीवन दे सके? भारत शहरी निवासियों को बुनियादी सुविधाएं देने में विफल रहा है चुनावों के दौरान भाजपा नारा देती रही है, डबल और ट्रिपल इंजिन की सरकार बनाने को। अर्थात भाजपा का शासन केंद्र में हो, राज्य में हो और महानगर निगमों में भी हो तो विकास भी दुगनी और तीगुनी रफ्तार से होगा। देश के ज्यादातर मतदाताओं ने भाजपा की बात पर भरोसा भी कर लिया और केंद्र के अलावा कई राज्यों में सरकार और महानगर निगमों में भाजपा बोर्ड बनवा दिया। अब मतदाता निश्चिंत हो गए कि चलो जिन जहां तीन स्थानों पर भाजपा की सरकार है, वहां विकास रॉकेट की रफ्तार से उड़ेगा। लेकिन परिणाम जन अपेक्षाओं के विपरीत आए। महानगरों में रहने वाले लोगों की हालत नरक में रहने जैसी हो गई। प्रदूषण से लोग जहरीली सांस लेने को मजबूर हो गए। पानी-बिजली के लिए हाहाकार मच गया। ट्रैफिक जाम से लोगों की सांस फूल गई। बारिश के दौरान पूरा शहर जलमग्न हो गया। सडकों पर गड्ढों में भरे पानी से लोगों की मौत होने लगी। यह हालत अकेले भाजपा के डबल ट्रिपल इंजिन वाले राज्यों के महानगरों की नहीं है बल्कि कांग्रेस और दूसरे दलों के राज्यों का भी यही हाल है। भारत के महानगरों की यह भयावह तस्वीर इकोनॉमिस्ट इंटेलिजेंस यूनिट द्वारा जारी ग्लोबल लिवेबिलिटी (रहने योग्य) इंडेक्स 2026 में उजागर हुई है। दुनिया के 173 शहरों का स्वास्थ्य, शिक्षा, आधारभूत ढांचा, पर्यावरण, स्थिरता और सांस्कृतिक सुविधाओं जैसे प्रमुख मानकों के आधार पर मूल्यांकन किया गया, जिसमें देश की राजधानी नई दिल्ली 120वें स्थान पर रही,

जबकि आर्थिक राजधानी मुंबई 121वें स्थान पर कायम रही। दक्षिण भारत के प्रमुख महानगर चेन्नई को 123वां और बेंगलुरु को लिवेबिलिटी रैंकिंग में 127वां स्थान मिला है। यह देश के सत्तारूढ़ दलों के नेताओं के लिए बेशक शर्म का विषय नहीं हो, किन्तु रैंकिंग की इस हालत से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की किरकिरी हुई है। उल्लेखनीय बात यह है कि पिछले वर्ष की तुलना में इन शहरों की रैंकिंग में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ। यह स्थिति दर्शाती है कि तेज आर्थिक विकास के बावजूद भारतीय महानगरों में जीवन गुणवत्ता, यातायात, प्रदूषण, सार्वजनिक सेवाओं और शहरी सुविधाओं से जुड़ी चुनौतियां और भारी भ्रष्टाचार अभी भी गंभीर समस्या बनी हुई हैं। गौरतलब है कि केंद्र में भाजपा सरकार है, दिल्ली राज्य में भाजपा की सरकार है और दिल्ली के महानगर निगम में भी भाजपा का कब्जा है। इसी तरह महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना की सरकार है। मुंबई महानगर निगम में भाजपा-शिवसेना का बोर्ड है। दिल्ली और मुंबई में ट्रिपल इंजिन की सरकार है। इसके बावजूद विश्व लिवेबिलिटी रैंकिंग में नई दिल्ली 120वें स्थान पर जबकि आर्थिक राजधानी मुंबई 121वें स्थान पर रही है। कर्नाटक में कांग्रेस की सरकार है। राजधानी बेंगलुरु को लिवेबिलिटी रैंकिंग में 127वां स्थान प्राप्त हुआ। हालांकि कांग्रेस ने कभी डबल या ट्रिपल इंजिन की सरकार का नारा नहीं दिया। इसी तरह ग्रेटर चेन्नई कॉर्पोरेशन में द्रमुक का बोर्ड है, अब यहां एक इंजिन रह गया है, पिछले महीनों तक जब स्टालिन की सरकार तमिलनाडु में थी, तब यहां डबल इंजिन की सरकार थी। अब तमिलनाडु में अभिनेता विजय की सरकार है। विश्व रहने योग्य रैंकिंग में चेन्नई को 123वां मिला है। ग्लोबल लिवेबिलिटी इंडेक्स में डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन ने पहला स्थान हासिल करते हुए दुनिया के सबसे रहने योग्य शहर का दर्जा बरकरार रखा। ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना दूसरे और ऑस्ट्रेलिया का मेलबर्न तीसरे स्थान पर रहा। कल्पना की जा सकती है कि जब भारत के चार प्रमुख शहरों की रहने लायक विश्व रैंकिंग का ये हाल है तो देश के बाकी शहरों का बुनियादी सुविधाओं के मामले में क्या हाल होगा। ऐसा नहीं है कि इन महानगरों की हालत नरक की तरह है, इनमें कुछ कम या ज्यादा खराब हालत देश के बाकी दूसरे छोटे शहरों की भी है, जो महानगर बनने की तरफ तेजी से बढ़ रहे हैं। केंद्र और राज्यों की सरकारों द्वारा किए गए वादे खोखले साबित हुए हैं। पिछले वर्ष शहरी कार्यक्रमों पर खर्च की गई राशि घोषित राशि से 40 प्रतिशत कम थी। सरकार की शहरी स्वच्छता की प्रमुख पहल का बजट आधा कर दिया गया, जबकि कुछ ही सप्ताह पहले इंदौर में कच्चे सीवेज से दूषित पानी पीने से दर्जनों लोगों की मौत हो गई थी।

शिष्य अंतर्मना ने चरण पखारे, गुरु पुष्पदंत सागर ने गले लगाया व उपहार स्वरूप पट्ट विभूषण (पट्टाचार्य) पद देने की घोषणा की

- ध्वजारोहण के साथ अंतर्मना जन्मोत्सव का शुभारंभ हुआ
- भक्तों ने वृक्षारोपण किया व निःशुल्क स्वास्थ चिकित्सा शिविर लाभ उठाया

सोनकच्छ (विश्व परिवार)। प्रसन्न सागर इस युग के महातपस्वी संत है उनकी साधना समर्पण मिठास से में बड़ा प्रभावित हु। जो मांबाप नहीं कर सके वो बेटे ने कर के दिखा दिया। इनकी साधना को देखता हु तो लगता है इनके अंदर का परमात्मा जाग चुका है। यह बात गणाचार्य पुष्पदंत सागर जी सागर जी महाराज ने शिष्य अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी के 57 वे जन्मोत्सव पर उपस्थित भक्तों से कही

उन्होंने जन्मोत्सव पर मंच पर शिष्य अंतर्मना को गले लगा कर प्रसन्नता व्यक्त की व उनकी साधना समर्पण से अभिप्रेरीत होकर आने वाली 15 तारीख को पट्टाचार्य पद से विभूषित करने की घोषणा की। यह सुनते ही पण्डाल गुरुङ्क शिष्य की जयकारों से गुंजायमान हो गया।

प्रवक्ता रोमिल जैन ने बताया आयोजन से पूर्व कि प्रात: 4 बजे से दिव्यमंगल पाठ आराधना व भगवान मुनिसुव्रतनाथ जिनालय में गणाचार्य पुष्पदंत सागर जी महाराज के सानिध्य में श्री जी कलशाभिषेक शांतिधारा की गई जहां गणाचार्य श्री ने शिष्य अंतर्मना आचार्य श्री को भजन गाते हुएं ताली बजाकर जन्मोत्सव का विशेष आशीर्वाद दिया। शिष्य ने त्रिवार बंदना करते हुए गुरु आशीष ग्रहण किया। जहां गुरुदेव ने कहा कि तुम्हे जल्द ही तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो...तुम आमजन हेतु स्वास्थ्य परीक्षण व आयुष्मान कार्ड पंजीयन ,ब्लड़ डोनेशन केम्प लगाया गया जिसमें कई भक्तों व क्षेत्रवासियों ने लाभ लिया । माँ जिनवाणी स्कूल सहित क्षेत्र के कई स्कूलों में विद्यार्थीयों हेतु हरमास एक उपवास विषय पर एक उपवास Fasting Once a Month, Every 7 महाअभियान प्रतियोगिता आयोजित हुई ,

दोपहर में भव्य पण्डाल में अतिथियों द्वारा द्वीपप्रज्वलन व सोनकच्छ जैन समाज की महिलाओं द्वारा मंगलाचरण नृत्य के साथ अंतर्मना जन्मोत्सव का आयोजन शुभारंभ हुआ। ग्वालियर की बालिकाओं ने भक्ति नृत्य प्रस्तुति दी। मुनि नेगम सागर जी महाराज ने मंगलाचरण भजन गाया।

इस अवसर पर स्वागत अध्यक्ष विधायक डॉ राजेश सोनकर ,जिला कलेक्टर ऋतुराज सिंह, अपर कलेक्टर संजीव जैन, सबरस कवि शशिकांत यादव आदि का पुष्पगिरी परिवार द्वारा स्वागत सम्मान किया गया। जिसके बाद गुरुभक्त परिवारों द्वारा भक्ति भाव से गुरुपूजा कर माहौल भक्तिमय कर दिया। शाम को गुरु भक्ति, आनंद यात्रा आरती एवं भजन संध्या आदि का आयोजन हुआ।

जल्दी भगवान बनो।

जिसके बाद बैंडबाजों के साथ गणाचार्य संघ पुष्पगिरी तीर्थ की शीर्ष पहाड़ी पर पहुंचे जहां लाभार्थी श्री अनिल श्रीमती मीणा जी विद्यासागर रोडवेज नागपुर द्वारा ध्वजारोहण के साथ अंतर्मना जन्मोत्सव का शुभारंभ हुआ। वही तीर्थ पहाड़ी पर गुरु सानिध्य में वृक्षारोपण किया गया। भगवान पद्मप्रभु चिकित्सालय में पुष्पगिरी तीर्थ व हॉपवेल हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वाधान में नि:शुल्क स्वास्थ चिकित्सा शिविर एवं

कुण्डलपुर जी में 26 को मुनि श्री समतासागर जी महाराज ससंघ की होगी भव्य अगवानी

कुण्डलपुर दमोह (विश्व परिवार)। सुप्रसिद्ध सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर में इस वर्ष 2026 का चातुर्मास ऐतिहासिक होगा। पूज्य बड़े बाबा के श्री चरणों में विश्व वंदनीय समाधि सम्राट संत शिरोमणि आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज एवं विद्या शिरोमणि प.पू.आचार्य श्री समयसागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से संयम ,समता और आत्म जागरण का दिव्य संदेश देने वाले महान् संत सरल व्यक्तित्व के धनी परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि श्री समता सागर जी महाराज ससंघ (4पिच्छी) एवं परम पूज्य ऐलक श्री चैत्यसागर जी महाराज (6 पिच्छी) का भव्य मंगल चातुर्मास होने जा रहा है। प्रचार मंत्री जयकुमार जैन जलज ने बताया कि प.पू. ऐलक श्री चैत्यसागर जी महाराज ससंघ(6 पिच्छी) का मंगल आगमन कुण्डलपुर में 19 जुलाई को हो चुका है जोअब 26 जुलाई रविवार को दोपहर में पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि श्री समतासागर जी महाराज ससंघ की भव्य मंगल अगवानी करेंगे। भव्य मंगल अगवानी हेतु कुण्डलपुर क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष चंद्रकुमार जैन सराफ के नेतृत्व में चातुर्मास समिति के संयोजक इजी. आरके जैन सहसंयोजक पदमचंद जैन खली वाले एवं चातुर्मास समिति के सभी प्रभारी,कुण्डलपुर क्षेत्र कमेटी के सभी पदाधिकारी सदस्य, मुनि सेवा समिति के सदस्य दमोह जिला के सभी पूज्य बड़े बाबा, छोटे बाबा के परम भक्त, कुण्डलपुर स्टाफ सभी श्रद्धालु भक्त निर्यापक मुनि संघ की भव्य अगवानी हेतु जोर-जोर से तैयारी में जुटे हुए हैं। अगवानी प्रभारी मनोज जैन मीनू ने अपनी टीम (दिलेश चौधरी, सवन सिल्वर,रिंकू घाट पिपरिया ,मुकेश ठेकेदार आदि) के साथ जानकारी दी कि इस भव्य आयोजन में धार्मिक आस्था, भक्ति और सांस्कृतिक वैभव का अद्भुत संगम दिखेगा। भव्य अगवानी शोभायात्रा के प्रमुख आकर्षण होंगे ग्राम मुड़िया का आकर्षक कलाबाजी दिखाता विशेष बैंड दल, 8 अश्वों पर ध्वज लिए वीरांगना बहनों की भव्य प्रस्तुति, 11 भव्य बग्गिया, दमोह की प्रसिद्ध रमतूला टीम ,आकर्षक डीजे रथ, 51 धर्म ध्वजों की टोली, विशेष डीजे पटेरा ,हटा महिला एवं बालिका मंडल ,सागर ढिमरयाई दल, दलदल घोड़ी, पटेरा ग्वाला टीम , पुष्प वर्षा करता विशेष डीजे रथ, दमोह जिला के विभिन्न नगर ग्रामों से महिला मंडलों की सहभागिता ,दमोह नगर के विभिन्न जिनालयों से महिला मंडलों की आकर्षक प्रस्तुति सहित सहभागिता, गौरझामर दिव्य घोष दल,अखाड़ा,देवरी दिव्य घोष देश के विभिन्न अंचलों से आए श्रद्धालु भक्त गण सहित अनेक आकर्षक प्रस्तुति के साथ सहभागी दल जुड़ने की संभावना है। - **जय कुमार जैन जलज**

धर्मनगरी कुंभोज की पावन धरा पर आचार्य श्री चंद्रप्रभसागर महाराज जी ससंघ का विद्यासन्मतीदास पावन वर्षायोग आज होगा भव्य मंगल प्रवेश

कुंभोज (महाराष्ट्र) (विश्व परिवार)। जैन संतों के चरण-रज से पावन इस कुंभोज की भूमि पर अनेक आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं ने विचरण कर इसे अध्यात्म,अहिंसा और त्याग से अलंकृत किया है।शिक्षणमहर्षी पद्मभूषण डॉ. कर्मवीर भाऊराव पाटील जी की भी जन्मभूमी भी कुंभोज है।

जैन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक पर्व चातुर्मास हेतु युवासम्राट, क्रांतीरत्न, प्रवचनकेसरी, संतवात्सल्यनिधी, जिनवाणीकंठभूषण, सम्यकरत्नाकर, ज्ञानदिवाकर, वात्सल्यमूर्ती प.पू. 108 आचार्यश्री चंद्रप्रभसागर महाराजजी, प.पू. मुनी श्री 108 नमितसागर महाराजजी, प.पू. मुनी श्री 108 भास्वतसागर महाराजजी, प.पू मुनी श्री 108 सरलसागर महाराजजी, प.पू मुनी श्री 108 चंद्रकीर्तीसागर महाराजजी, प.पू ऐलक श्री 105 वात्सल्यसागर महाराजजी का आगमन 24 जुलाई 2026 को कुंभोज में सुबह 8 बजे होगा।

वर्षा ऋतु के चार महीनों में दिगंबर जैन आचार्य, मुनि और आर्यिकाएं एक स्थान पर विराजमान रहकर प्रवचन, स्वाध्याय, तप, त्याग और धर्म प्रभावना के माध्यम से समाज को संयम और संस्कारों का संदेश देंगे। वर्षा ऋतु में सूक्ष्म जीवों की रक्षा और अहिंसा की भावना के कारण जैन संत चार माह तक एक ही स्थान पर विराजते हैं। चातुर्मास के दौरान गुरु पूर्णिमा, वीर शासन जयंती, दशलक्षण महापर्व, अनंत चतुर्दशी, क्षमावाणी पर्व और भगवान महावीर मोक्ष कल्याणक सहित अनेक धार्मिक आयोजन होंगे।

संस्कार बदलेंगे तो बदलेगा जीवन, सम्यक दृष्टि ही आत्मकल्याण और मोक्ष का प्रथम द्वार : निर्यापक श्रमण मुनि 108 श्री योगसागर जी महाराज

कोटा (विश्व परिवार)। श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन पुण्योदय अतिशय क्षेत्र, नसियां जी, दादाबाड़ी में निर्यापक श्रमण मुनि 108 श्री योगसागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में आयोजित अष्टान्हिका महापर्व एवं नौ दिवसीय सिद्धचक्र महामंडल विधान महोत्सव के तृतीय दिवस श्रद्धा, भक्ति, आराधना एवं आध्यात्मिक साधना का अद्भुत संगम देखने को मिला। प्रात:काल से ही मंदिर परिसर णमोकार महामंत्र, भक्तिभाव और जिनवाणी की मंगलध्वनि से गुंजायमान रहा। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने विधान, अभिषेक, पूजन एवं अर्घ्य समर्पण कर आत्मशुद्धि, विश्वशांति एवं समस्त जीवों के मंगल की कामना की।

श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन पुण्योदय अतिशय क्षेत्र के निदेशक हुकम जैन 'काका' ने बताया कि प्रात:काल मंत्रोच्चार एवं विधि-विधान के साथ सिद्धचक्र महामंडल विधान सम्पन्न हुआ, जिसमें महिला एवं पुरुष श्रद्धालुओं ने अत्यंत

श्रद्धा और भक्ति के साथ सहभागिता कर आत्मकल्याण का पुण्य अर्जित किया।

सम्यक दृष्टि ही मोक्षमार्ग का प्रथम द्वार

विधान समिति के अध्यक्ष जम्बू जैन सर्राफ ने बताया कि धर्मसभा को संबोधित करते हुए निर्यापक श्रमण मुनि 108 श्री योगसागर जी महाराज ने संस्कार, सम्यक दर्शन और आत्मकल्याण पर आधारित ओजस्वी प्रवचन देते हुए कहा कि जीव अपने कर्मों और संस्कारों के अनुसार अनादिकाल से जन्म-मरण के चक्र में भटक रहा है। यदि मनुष्य अपने परिणामों का आत्मनिरीक्षण कर सम्यक दृष्टि, सदाचार और धर्ममय जीवन को अपनाए, तो उसके लिए मोक्षमार्ग स्वत: प्रशस्त हो जाता है।

मुनिश्री ने कहा कि संसार में अनंत जीव हैं, किंतु प्रत्येक जीव के संस्कार, भाव और परिणाम भिन्न-भिन्न हैं। मनुष्य को यह समझना चाहिए कि मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, श्रावकत्व और श्रमणत्व आत्मा की आध्यात्मिक यात्रा के चार महत्वपूर्ण सोपान हैं। मिथ्या दृष्टि वाला व्यक्ति सत्य और असत्य का विवेक खो देता है, जबकि सम्यक दृष्टि से युक्त व्यक्ति धर्म, कर्तव्य, मर्यादा और आत्मकल्याण के पथ पर अग्रसर होता है। मर्यादा की रक्षा ही धर्म का स्वरूप है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मुनिश्री ने कहा कि श्रीराम और रावण का युद्ध व्यक्तिगत प्रतिशोध का नहीं, बल्कि धर्म, सत्य, वचन और मर्यादा की रक्षा का युद्ध था।

- **अभिषेक जैन लोहाड़िया**

सम्यक दृष्टि का पुण्य नियम से मोक्ष का कारण है : श्रमण धारा प्रवचन माला में मुनि श्री के मंगल प्रवचन

राघौगढ़ (विश्व परिवार)। दिगंबर जैन आचार्य संत शिरोमणि विद्यासागर जी महाराज के परम परम प्रभावक सुयोग्य शिष्य बुंदेली महाकवि मुनि श्रवण सागर जी महाराज ने मंगल प्रवचन करते हुए कहा जब तक मैं भगवान नहीं बन जाता व्यवहार नहीं छोड़ सकता। मगर व्यवहार हमारा लक्ष्य नहीं है। पुण्य हमें प्रतिफल चाहिए। पुण्य को सोने की बेड़ी कहा है। हमें यह समझना होगा कि पुण्य कब उपादेय है एवं कब हेय है ।आपने कहा जब तक मोक्ष की इच्छा नहीं होगी तब तक मोक्ष नहीं होगा। जब तक पंच परमेष्ठी का अवलंबन नहीं लेंगे मोक्ष नहीं होगा। जब तक दीक्षा नहीं होगी भगवान नहीं बन सकते। सम्यक दृष्टि का पुण्य नियम से मोक्ष का कारण है। ब्रह्मांड का जैसा स्वरूप है वैसा मानना सम्यक दर्शन है। मुनि श्रमण सागर जी महाराज ने सम्यक दर्शन की व्याख्या करते हुए कहा माता को माता मानना

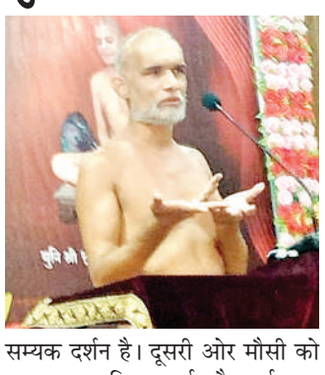

सम्यक दर्शन है। दूसरी ओर मौसी को माता मानना मिथ्या दर्शन है। धर्म सभा का संचालन कर रहे विकास कुमार जैन ने उल्लेख किया मुनि श्रमण सागर जी महाराज एवं मुनि ओंकार सागर जी का इस वर्ष का चातुर्मास धर्मनगरी राघौगढ़ में होने जा रहा है गत 20 जुलाई से महाराज के प्रवचन श्रमण धारा प्रवचन माला पर निरंतर चल रहे हैं साधार्मी पुरुष एवं महिलाएं महाराज जी के प्रवचन सुनकर धर्म लाभ ले रहे हैं।

- **विजय जैन**

वारंटी अवधि में वाहन की नि:शुल्क करनी होगी मरम्मत

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग बलौदाबाजार द्वारा वाहन कम्पनी को सेवा में कमी का दोषी मानते हुए परिवादी के वाहन को उसकी पूर्ण संतुष्टी के साथ नि:शुल्क सुधारकर दिये जाने, वाहन सुधारकर नहीं दिये जाने की स्थिति में वाहन के आईडीव्ही मूल्य प्रदाय किये जाने एवं उपभोक्ता को मानसिक क्षतिपूर्ति हेतु राशि 15000 तथा वाद-व्यय हेतु 7000 रूपये परिवादी को प्रदाय किये जाने का आदेश पारित किया गया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम लच्छनपुर निवासी लक्ष्मीनारायण गायकवाड़ ने विरोधी पक्षकार क्र. 1 बेनाली मोटर लिमिटेड हैदराबाद ?द्वारा निर्मित बेनाली मोटरसायकिल विरोधी पक्षकार क्र. 2 देवांस बाईक वर्ड, चंगोरभाठा रायपुर से खरीदा था। तकनीकी खराबी आने से उक्त वाहन का इंजन खराब हो गया जिसे विरोधी पक्षकारगण के निर्देशों पर रायपुर एवं बिलासपुर में कंपनी के शोरूम व सर्विसिंग सेंटर में बनाने का काफी प्रयास किया गया परन्तु वाहन में पूर्णत: सुधार नहीं हुआ सामान्य सर्विसिंग कर वाहन उपभोक्ता को प्रदाय कर आश्वासन दिया गया कि यदि कोई खराबी भविष्य में आती है तो उपभोक्ता के गृह ग्राम में आकर उत्तका निराकरण नि:शुल्क किया जाएगा। कुछ दिवस उपरांत वाहन में पुन: खराबी आयी जिसकी सूचना एवं शिकायत विरोधी पक्षकारगण को किया गया वाहन वारंटी अवधि में था।

नि:शुल्क कौशल प्रशिक्षण हेतु आवेदन 10 अगस्त तक

बलौदाबाजार। जिला परियोजना लाईवलीहुड कॉलेज, सकरी, बलौदाबाजार में 5 दिवसीय प्रशिक्षण एवं सर्टिफिक्रेशन हेतु आवेदन 10 अगस्त 2026 तक आमंत्रित किये गए है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 4.0 अंतर्गत आरपीएल के तहत जल वितरक संचालक, अस्सिटेंट इलेक्ट्रीशियन, सोलर पी.व्ही. इन्सटालर (सूर्यमित्र) एवं जनरल ड्यूटी असिस्टेंट में पूर्व प्रशिक्षित एवं अनुभवी हितग्राही जिनको अपनी योग्यता एवं अनुभव के आधार पर कौशल प्रमाण पत्र की आवश्यकता है वे इस प्रशिक्षण का लाभ ले सकते है। प्रशिक्षण प्रतिदिन 6 घंटा पूर्ण होने उपरांत परीक्षा ली जाएगी।आयु सीमा 18 वर्ष से 45 वर्ष तक। हितग्राहियों के पास आधार कार्ड होना अनिवार्य है।

चंद्रशेखर आजाद जयंती के स्मरण में बच्चों ने रोपे पौधे

- शिक्षकों ने कहा - महापुरुषों के जीवन से मिलती है प्रेरणा

आरंग (विश्व परिवार)। गुरुवार को शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चरौदा में गुरुवार को चंद्रशेखर आजाद की जयंती श्रद्धा के साथ मनाई गई।कार्यक्रम में बच्चों ने आजाद के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर पुष्प अर्पित किए और उनकी जीवनी का वाचन किया। शिक्षकों ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि महापुरुषों के जीवन से हमें देशभक्ति, त्याग और आत्मसम्मान की सीख मिलती है। इसलिए हमें उनकी जीवनी अवश्य पढ़नी चाहिए। वहीं आजाद जयंती के स्मरण में बच्चों और शिक्षकों ने मिलकर कदम के दो पौधे रोपित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया। वहीं प्रकृति प्रेमी शिक्षक महेन्द्र पटेल ने कहा बच्चों को बचपन से ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक और संस्कार दे रहे हैं।पौधरोपण में संस्था प्रधान के के परमाल,शिक्षक महेन्द्र कुमार पटेल, सूर्यकांत चंद्राकर, दीनदयाल धीवर, डिलेश्वर प्रसाद साहू, शिक्षिका संगीता पाटले सहित बड़ी संख्या में बच्चों ने भाग लिया।

स्मार्ट मीटर पर उठे सवाल: बढ़ते बिजली बिलों की निष्पक्ष जांच की मांग

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश में स्मार्ट मीटर लगाए जाने के बाद बड़ी संख्या में बिजली उपभोक्ताओं द्वारा पहले की तुलना में अधिक बिजली बिल आने की शिकायतें सामने आ रही हैं। इस संबंध में सामाजिक कार्यकर्ता एवं जनसेवक अजय पनिकर ने सरकार और बिजली वितरण कंपनी से स्मार्ट मीटर व्यवस्था की निष्पक्ष जांच कराने की मांग की है।

अजय पनिकर का कहना है कि प्रदेशभर के बिजली कार्यालयों में प्रतिदिन अनेक उपभोक्ता बढ़े हुए बिजली बिलों की शिकायत लेकर पहुंच रहे हैं। उनका आरोप है कि स्मार्ट मीटर लगाए जाने के दौरान उपभोक्ताओं को किसी स्पष्ट शासनादेश, अधिसूचना या कानूनी आधार की जानकारी नहीं दी गई। उन्हें केवल यह बताया गया कि सरकार के

निर्णय के अनुसार सभी उपभोक्ताओं को स्मार्ट मीटर लगवाना होगा।

उन्होंने कहा कि शिकायत करने पर उपभोक्ताओं से मीटर परीक्षण कराने और उसके लिए शुल्क जमा करने को कहा जाता है। उनका प्रश्न है कि जब बड़ी संख्या में उपभोक्ता एक जैसी समस्या का सामना कर रहे हैं, तब प्रत्येक उपभोक्ता से अलग-अलग जांच शुल्क लेना कितना उचित है। साथ ही यदि मीटर की जांच उसी व्यवस्था के माध्यम से होगी जिसने मीटर लगाया है, तो उसकी निष्पक्षता और पारदर्शिता पर भी सवाल उठना स्वाभाविक है।

अजय पनिकर ने मांग की है कि स्मार्ट मीटर लगाए जाने से संबंधित शासनादेश अथवा कानूनी आधार को सार्वजनिक किया जाए, बढ़े हुए बिजली बिलों की स्वतंत्र एवं निष्पक्ष तकनीकी जांच कराई जाए, मीटर परीक्षण किसी स्वतंत्र एजेंसी से कराया जाए तथा जांच पूरी होने तक विवादित बिजली बिलों पर उपभोक्ताओं को उचित राहत प्रदान की जाए।

उन्होंने यह भी कहा कि बिजली अधिनियम, 2003 में ऐसा कोई स्पष्ट प्रावधान नहीं है जो सभी मौजूदा घरेलू उपभोक्ताओं के लिए स्मार्ट मीटर को अनिवार्य घोषित करता हो। साथ ही, उनके अनुसार ऐसा कोई सामान्य सर्वोच्च न्यायालय का आदेश भी उपलब्ध नहीं है, जिसमें पूरे देश के सभी उपभोक्ताओं के लिए स्मार्ट मीटर अनिवार्य करने का निर्देश दिया गया हो।

भिलाई इस्पात संयंत्र ने दो गांवों में लगाए नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर

- ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण कर दवाइयों का नि:शुल्क वितरण किया गया
- 90 ग्रामीणों को मिला उपचार एवं परामर्श का लाभ

भिलाई (विश्व परिवार)। भिलाई इस्पात संयंत्र ने अपने निगमित सामाजिक दायित्व (सीएसआर) कार्यक्रम के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच सुदृढ़ करने की दिशा में दुर्ग जिला चिकित्सालय के सहयोग से दुर्ग जिले के गोढ़ी और खोपली गांवों में नि:शुल्क चिकित्सा जांच एवं स्वास्थ्य परामर्श शिविर आयोजित किए। शिविरों में ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया, चिकित्सकीय परामर्श प्रदान किया गया तथा आवश्यक दवाइयों का नि:शुल्क वितरण किया गया। 20 जुलाई 2026 को धमधा विकासखंड के ग्राम गोढ़ी में आयोजित शिविर में जिला चिकित्सालय, दुर्ग की चिकित्सा अधिकारी डॉ. गायत्री श्याम, फार्मासिस्ट जान्हवी, नर्सिंग स्टाफ तृप्ति कुमारी, पंजीयन सहयोगी राकेश कुमार तथा सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर-सीएचओ) गुलेश्वरी साहू ने सेवाएं प्रदान कीं। शिविर में 40 ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया, जिनमें 12 पुरुष और 28 महिलाएं शामिल थीं। सभी हितग्राहियों को आवश्यक चिकित्सकीय परामर्श के साथ नि:शुल्क दवाइयां उपलब्ध कराई गईं।

इसी क्रम में 21 जुलाई 2026 को निकुम विकासखंड के ग्राम खोपली में आयोजित चिकित्सा शिविर में चिकित्सा अधिकारी डॉ. गायत्री श्याम, फार्मासिस्ट मनीष देशमुख, नर्सिंग स्टाफ रेणुका वर्मा तथा पंजीयन सहयोगी विवेक ध्रुव ने सेवाएं दीं।

वृंदावन सभागार में भव्य काव्य संध्या 'राहगिरी' का आयोजन

रायपुर। नवरंग काव्य मंच, रायपुर दिनांक 26 जुलाई रविवार संध्या 5:00 बजे से स्थानीय वृंदावन सभागार सिविल लाइंस में भव्य काव्य संध्या 'राहगिरी' का आयोजन करने जा रहा है।

इस कार्यक्रम में नवोदित एवं मूर्धन्य कवि अपने काव्य पाठ से विविध रसों की बौछार करेंगे। कार्यक्रम में मेरे द्वारा 'राहगिरी' जीवन का सफ़र कविताओं के साथ की एकल प्रस्तुति भी होगी। शहर की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं का सम्मान भी होगा। सभी काव्य रसिक उपरोक्त कार्यक्रम में सादर आमंत्रित हैं।

देश के सबसे बड़े ट्रेड फेयर 'भारत व्यापार महोत्सव' के लिए सरगुजा से बस्तर तक रिकॉर्ड बिजनेस डेलीगेट पंजीयन अभियान शुरू

रायपुर (विश्व परिवार)। देश के सबसे बड़े व्यापारिक संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (CAIT) के नेषनल वाइस चेयरमेन श्री अमर पारवानी, छत्तीसगढ़ इकाई के चेयरमेन श्री जितेन्द्र दोशी, श्री विक्रम सिंहदेव, प्रदेश अध्यक्ष श्री परमानंद जैन, वाइस चेयरमेन श्री सुरिन्दर सिंह, श्री जीवत बजाज, महामंत्री श्री अवनीत सिंह, कोषाध्यक्ष श्री विजय पटेल, कार्यकारी अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जग्गी, श्री वासु माखीजा, श्री राम मंधान, श्री भरत जैन, श्री राकेश ओचवानी एवं श्री शंकर बजाज ने संयुक्त रूप से बताया कि देश के सबसे बड़े व्यापारिक संगठन कन्फेडरेशन ऑफ

ऑल इंडिया ट्रेडर्स (CAIT) द्वारा 12 से 15 अगस्त 2026 तक नई दिल्ली के प्रतिष्ठित भारत मंडपम में आयोजित होने वाले 'भारत व्यापार महोत्सव' में छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक एवं रिकॉर्ड सहभागिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से आज कैट छत्तीसगढ़ की एक महत्वपूर्ण बैठक प्रदेश कार्यालय, रायपुर में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता कैट के नेशनल वाइस चेयरमैन एवं राष्ट्रीय व्यापारी कल्याण बोर्ड (भारत सरकार) के सदस्य श्री अमर पारवानी ने की। बैठक में सरगुजा से बस्तर तक प्रदेश के 26 जिलों के जिला अध्यक्षों एवं प्रमुख पदाधिकारियों ने भाग लिया तथा प्रत्येक जिले से अधिकतम संख्या में बिजनेस डेलीगेट पंजीयन कराने का संकल्प लिया।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

प्रादेशिकी

रायपुर, शुक्रवार 24 जुलाई 2026

संक्षिप्त समाचार

15,000 का आंकड़ा पार : वेदांता का नंद घर देशभर में लगातार बढ़ा रहा है अपनी पहुंच छत्तीसगढ़ में 262नंद घर संचालित

विकसित भारत 2047 के निर्माण की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए, अनिल अग्रवाल फाउंडेशन के अंतर्गत वेदांता की प्रमुख सामाजिक पहलनंद घरने भारत के 18 राज्यों और 76 जिलों में 15,000 केंद्रों का महत्वपूर्ण पड़ाव हासिल कर लिया है। यह उपलब्धि कार्यक्रम के राष्ट्रीय विस्तार की तेज़ गति को दर्शाती है। नवंबर 2025 में 10,000 नंद घरों का आंकड़ा पार करने के बाद, इस पहल ने मात्र आठ महीनों में 5,000 नए केंद्र जोड़ लिए हैं। पिछले एक वर्ष में नंद घर ने आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और बिहार जैसे नए राज्यों में भी अपना विस्तार किया है, जिससे देश की सबसे बड़ी सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) पहलों में से एक के माध्यम से भारत के आंगनवाड़ी तंत्र को और सशक्त बनाया जा रहा है।

इस उपलब्धि परशशि अरोड़ा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ), नंद घरने कहा,भारत की विकास क्षमता उसके बच्चों में निहित है। हमारे चेयरमैन श्री अनिल अग्रवाल के उस विज़न से प्रेरित होकर, जिसमें भारत की आंगनवाड़ियों को पोषण, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के आधुनिक उत्कृष्टता केंद्रों में बदलने का लक्ष्य है, हमें गर्व है कि आज हमने 18 राज्यों में 15,000 नंद घर केंद्रों का मील का पत्थर हासिल किया है। प्रत्येक नया नंद घर भारत के भविष्य में किया गया एक निवेश है, जो बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पोषण, प्रारंभिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराता है, वहीं महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के अवसर भी प्रदान करता है। यह उपलब्धि सरकारों, समुदायों और हमारे साझेदारों के साथ मिलकर एक स्वस्थ और सशक्त भारत के निर्माण के हमारे संकल्प को और मजबूत करती है।

एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने भारत में डिजिटल बैंकिंग और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए ष्टस्ष्ट के साथ पार्टनरशिप की

कोलकाता: एयरटेल पेमेंट्स बैंक ने CSC e-Governance Services India Limited के साथ एक मैमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग (MoU) पर दस्तखत किए हैं। इस साझेदारी का उद्देश्य देश में डिजिटल बैंकिंग एवं बिल पेमेंट सेवाओं की उपलब्धता बढ़ाकर वित्तीय समावेशन लाना है। Mo पर दस्तखत कोलकाता में ष्टस्ष्ट के 17वें फाउंडेशन डे के अवसर पर किए गए। इस पार्टनरशिप के बाद एयरटेल पेमेंट बैंक की बैंकिंग और डिजिटल पेमेंट सेवाएं देश में 560,000 से अधिक कॉमन सर्विस सेंटर्स (CSC) पर उपलब्ध होंगी। इससे भारत के गाँवों में रहने वाले लोगों तक औपचारिक वित्तीय सेवाएं पहुँचाने में मदद मिलेगी। CSC e-Governance की शुरुआत इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) ने नागरिकों के लिए सरकारी (G2C) योजनाओं के क्रियान्वयन की निगरानी के लिए की थी। कॉमन सर्विस सेंटर नागरिकों को (G2C) सेवाएं उपलब्ध कराते हैं। CSC आउटलेट पर आकर ग्राहक एयरटेल पेमेंट बैंक बचत खाता खुलवा सकेंगे, सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए अपने खातों को लिंक कर सकेंगे और यूटिलिटी एवं अन्य बिल भुगतान कर सकेंगे। इस पार्टनरशिप का उद्देश्य डिजिटल फाईनेंशियल सेवाओं का जमीनी स्तर पर विस्तार करना है।

एचडीएफसी इर्गो ने छत्तीसगढ़ के किसानों के लिए प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना लागू की

रायपुर। भारत में प्राइवेट सेक्टर की अग्रणी जनरल इंश्योरेंस कंपनी, एचडीएफसी इर्गो जनरल इंश्योरेंस कंपनी को छत्तीसगढ़ सरकार ने खरीफ 2026 सीजन के लिए बालोद, बलौदाबाजार, बलरामपुर, बिलासपुर, दंतेवाड़ा, दुर्ग, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही, मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर, मुंगेली, रायपुर, सरगुजा और सुकमा जिलों में ऋणी और गैर-ऋणी किसानों के लिए प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) लागू करने के लिए अधिकृत किया है। इन जिलों में इस योजना का क्रियान्वयन छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा योजना के अंतर्गत अधिसूचित निम्नलिखित फसलों के लिए किया जाएगा, जिनके लिए फसलों के अनुसार अंतिम तिथियाँ भी जारी कर दी गई हैं। पीएमएफबीवाई + ए1: जी18 खरीफ 2026 जिले और फसल के अनुसार बीमा की राशि और किसान के लिए प्रीमियम की दर, प्रति हेक्टेयर। पीएमएफबीवाई योजना में किसानों को सूखा, बाढ़, अकाल, भूस्खलन, चक्रवात, तूफान, ओलावृष्टि, सैलाब, कीट, बीमारियों आदि जैसे कई बाहरी प्रकोपों से फसल को होने वाले नुकसान पर बीमा की सुरक्षा मिलती है। फसल के नुकसान का आकलन करने के लिए, राज्य सरकार इस योजना के लिए अधिसूचित क्षेत्रों में अधिसूचित फसलों पर फसल कटाई प्रयोग (सीसीई) की योजना बनाकर उसका संचालन करेगी।

डीईओ पदस्थापना पर घमासान: वरिष्ठ प्राचार्यो ने खोला मोर्चा, हाईकोर्ट पहुंचा मामला

कनिष्ठ अधिकारियों को जिला शिक्षा अधिकारी बनाए जाने पर उठे सवाल, न्यायालय के फैसलों से बढ़ी शिक्षा विभाग की मुश्किलें

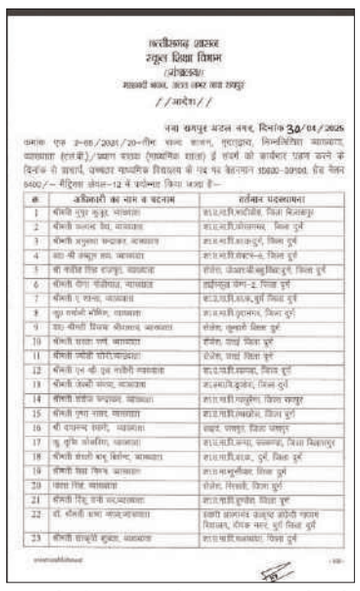

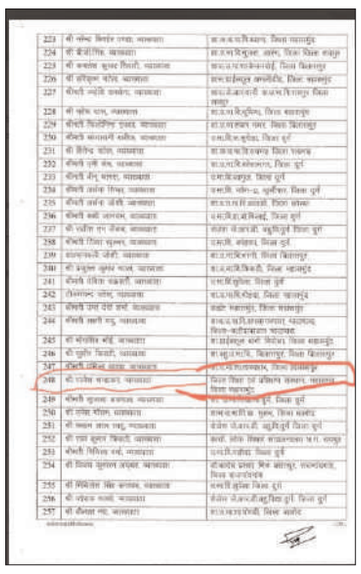

गरियाबंद (विश्व परिवार)। जिले का शिक्षा विभाग इन दिनों लगातार विवादों के केंद्र में है। एक ओर जिला शिक्षा अधिकारी पर अटैचमेंट को लेकर भाई-भतीजावाद के आरोप लग रहे हैं, वहीं अब जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ) की पदस्थापना को लेकर नया विवाद खड़ा हो गया है। प्रदेशभर के वरिष्ठ प्राचार्यों ने कनिष्ठ अधिकारियों को डीईओ बनाए जाने के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है और इस व्यवस्था को न्यायालय में चुनौती दी है।

जानकारी के अनुसार, राज्य शासन ने प्रदेश के कई जिलों में जिला शिक्षा अधिकारियों की नियुक्ति ऐसे अधिकारियों को दी है जो वरिष्ठता सूची में काफी पीछे हैं। इनमें वर्ष 2025 में पदोन्नत हुए व्याख्याता, प्रधान पाठक और कनिष्ठ प्राचार्य भी शामिल हैं। इन नियुक्तियों को लेकर वरिष्ठ प्राचार्यों का कहना है कि शासन ने निर्धारित नियमों और वरिष्ठता के सिद्धांतों की अनदेखी की है।

इसी मुद्दे को लेकर हाल ही में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा प्राचार्य एलबी रामेश्वर जायसवाल को बिलासपुर जिले का प्रभारी जिला शिक्षा अधिकारी बनाए जाने के आदेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी गई थी। प्राचार्य राघवेंद्र गौराहा और कामेश्वर बैरागी ने याचिका दायर कर कहा कि उनसे कई वर्षों जूनियर अधिकारी को डीईओ बनाकर वरिष्ठता के अधिकारों का उल्लंघन किया गया है।

याचिकाकर्ताओं की ओर से अधिवक्ता जितेंद्र पाली ने न्यायालय में राज्य सरकार के प्रचलित परिपत्र का हवाला देते हुए दलील दी कि विभाग ने नियमों और निर्धारित मापदंडों की अनदेखी की है। उन्होंने बताया कि बिलासपुर जिले में 100 से अधिक ऐसे प्राचार्य हैं जो नियुक्त अधिकारी से लगभग 18 वर्ष याठ उससे अधिक वरिष्ठ हैं। इसके बावजूद केवल छह माह पूर्व शिक्षक एलबी से प्राचार्य पद पर पदोन्नत हुए अधिकारी को प्रभारी डीईओ का दायित्व सौंप दिया गया।

याचिका में यह भी तर्क दिया गया कि शासन के परिपत्र के अनुसार कोई कनिष्ठ अधिकारी अपने वरिष्ठ अधिकारी की गोपनीय चरित्रावली (सीआर) नहीं लिख सकता। ऐसे में वरिष्ठ अधिकारियों के ऊपर कनिष्ठ अधिकारी की नियुक्ति नियमों के विपरीत है।

मामले की सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने बिलासपुर के प्रभारी जिला शिक्षा अधिकारी की पदस्थापना पर हस्तक्षेप करते हुए उन्हें पद से हटा दिया। इसी प्रकार का आदेश बलौदाबाजार के वर्तमान जिला शिक्षा अधिकारी के मामले में भी सामने आया है, जिससे शिक्षा विभाग में हलचल तेज हो गई है।

अब गरियाबंद सहित अन्य जिलों में की गई जिला शिक्षा अधिकारियों की नियुक्तियों पर भी सवाल उठने लगे हैं। वरिष्ठ प्राचार्यों का मानना है कि यदि नियुक्तियां नियमों और वरिष्ठता के अनुरूप नहीं हुईं, तो ऐसे मामलों में न्यायालय का रुख किया जाएगा।

फिलहाल गरियाबंद जिले में वर्तमान जिला शिक्षा अधिकारी की पदस्थापना कितने समय तक बरकरार रहेगी, यह आने वाले दिनों में उच्च न्यायालय के आदेश पर निर्भर करेगा। शिक्षा विभाग में चल रहे इन विवादों ने शासन की नियुक्ति प्रक्रिया पर भी कई गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

10 अगस्त को कोल इंडिया के सभी महाप्रबंधक कार्यालयों का होगा घेराव -अजय विश्वकर्मा

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- संयुक्त कोयला मजदूर सभा के केंद्रीय महामंत्री अजय विश्वकर्मा ने बताया कि आगामी 10 अगस्त को कंपनी के सभी महाप्रबंधकों के कार्यालय के सामने घेराव का ऐलान किया गया है।

एटक के केंद्रीय महामंत्री अजय विश्वकर्मा ने विज्ञप्ति जारी कर बताया कि आगामी 10 अगस्त को कोल इंडिया स्तर पर चारों केंद्रीय श्रमिक संगठनों एटक, एच एम एस, इंटक, एवं सीटू की फेडरेशन की संयुक्त ज़ूम बैठक आईएमडब्ल्यूएफ के महासचिव कॉमरेड रामेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में प्रत्येक संगठन से 7-7 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

बैठक में एटक की ओर से कॉमरेड रामेन्द्र कुमार, अशोक यादव, लखनलाल महतो, अजय विश्वकर्मा एवं सी. जे. जोसेफ एचएमएस की ओर से कॉमरेड हरभजन सिंह सिद्धू एवं अशोक पांडेय, इंटक की ओर से कॉमरेड कुमार जय मंगल सिंह एवं एस. क्यू. ज़ामा, तथा सीटू की ओर से कॉमरेड डी.डी. रामानंदन, वी. एम. मनोहर जी एवं के. श्रीवास्तव सहित चारों संगठनों के वरिष्ठ पदाधिकारी एवं प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि 10 अगस्त 2026 को कोल इंडिया एवं उसकी सभी अनुषंगी कंपनियों के सभी क्षेत्रीय महाप्रबंधक कार्यालयों का संयुक्त घेराव एवं एकदिवसीय धरना-प्रदर्शन किया जाएगा।

श्रमिक नेता अजय विश्वकर्मा ने आंदोलन की प्रमुख मांगें के संबंध में बताया कि - जे बी सी सी आई -12 का तत्काल गठन,11वें वेतन समझौते के लंबित मुद्दों का शीघ्र क्रियान्वयन सहित बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि 11 एवं 12 सितंबर 2026 को रांची में चारों कोल फेडरेशनों का संयुक्त कोल कन्वेंशन आयोजित किया जाएगा। साथ ही, चारों फेडरेशन संयुक्त रूप से कोल इंडिया के अध्यक्ष को पत्र भेजकर लंबित मांगों के शीघ्र निराकरण की मांग करेंगे।

चारों केंद्रीय श्रमिक संगठनों ने एसईसीएल सहित कोल इंडिया की सभी अनुषंगी कंपनियों के श्रमिकों से 10 अगस्त के आंदोलन को सफल बनाने के लिए व्यापक तैयारी करने तथा क्षेत्र स्तर पर संयुक्त बैठकें आयोजित करने का आह्वान किया।

श्याम मेटेलिक्स पर विभिन्न ब्रोकरेज का भरोसा बरकरार; गोल्डमैन साक्स, जेफ्रीज़, जेएम फाइनेंशियल और 360 वन ने क्षमता विस्तार पर जताया भरोसा, नुवामा सतर्क

श्याम मेटेलिक्स एंड एनर्जी (एसएमईएल) ने वित्त वर्ष '27 की पहली तिमाही में शानदार प्रदर्शन किया। इसमें बेहतर रियलाइज़ेशन, बेहतर उत्पाद मिश्रण और मूल्यवर्धित व्यवसाय से बढ़ते योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका रही। हालांकि कंपनी के मूल्यांकन को लेकर विभिन्न ब्रोकरेज की राय अलग-अलग रही, लेकिन सभी ने कंपनी के विस्तार की योजनाओं, डाउनस्ट्रीम इंटीग्रेशन और बेहतर होती अर्निंग को वृद्धि के मुख्य कारण बताया। गोल्डमैन साक्स ने अपनी 'खरीद' रेटिंग बनाए रखी और टारगेट प्राइस 1,050 से बढ़ाकर 1,120 कर दिया। ब्रोकरेज ने एसएमईएल को मात्रा-वृद्धि पर ध्यान देने वाली कंपनी बताया और उम्मीद जताई कि सरिया (रीबार) की कीमतों में मौसमी गिरावट के बावजूद कंपनी की अर्निंग मज़बूत बनी रहेगी। गोल्डमैन का मानना है कि एल्युमीनियम, स्टेनलेस स्टील और कोल्ड-रोल्ड उत्पाद मुनाफे को सहारा देंगे, जबकि नई लोहा निर्माण संयंत्रों और संबलपुर स्थित एल्युमीनियम फॉयल संयंत्र की क्षमता बढ़ने से वॉल्यूम में बढ़ोतरी होगी। ब्रोकरेज को उम्मीद है कि वित्त वर्ष '27 में एबिट्डा मार्जिन 15त्न से ऊपर बना रहेगा। साथ ही वित्त वर्ष 27-29 के लिए एबिट्डा अनुमानों को 1.5-5.5त्न तक बढ़ा दिया गया है। गोल्डमैन ने घरेलू स्टील की अच्छी मांग, बेहतर उत्पाद मिश्रण, नवीकरणीय बिजली पहल और अगले 9-12 महीनों में मज़बूत कमीशनिंग पाइपलाइन का भी ज़िक्र किया।

जेफ्रीज़ ने अपनी 'खरीद' की रेटिंग बरकरार रखी और टारगेट प्राइस ?1,150 से बढ़ाकर 1,250 कर दिया। ब्रोकरेज ने जून तिमाही को मज़बूत बताया, जिसमें वॉल्यूम वृद्धि और मार्जिन में बढ़ोतरी से एबिट्डा में सालाना आधार पर 33त्न की बढ़ोतरी हुई और यह अनुमान से 19त्न अधिक रहा। जेफ्रीज़ को उम्मीद है कि कमॉडिटी की कीमतों में नरमी और कच्चे माल की इन्वेंट्री से मिलने वाले लाभ में कमी के कारण दूसरी तिमाही के दौरान मुनाफे में कुछ कमी आ सकती है, लेकिन कंपनी की दीर्घकालिक वृद्धि की संभावनाओं को लेकर वह सकारात्मक है। उसने एसएमईएल के 10,000 करोड़ के विस्तार कार्यक्रम को रेखांकित किया।

ग्रामीण पेयजल व्यवस्था की रीढ़ बने नल जल मित्र

प्रशिक्षण के बाद गांवों में संभाल रहे पेयजल योजनाओं के संधारण की जिम्मेदारी

जगदलपुर. ग्रामीण क्षेत्रों में सुरक्षित और नियमित पेयजल उपलब्ध कराने की दिशा में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग की पहल से प्रशिक्षित 'नल जल मित्र' अब गांवों में जल प्रदाय योजनाओं और हैंडपंपों के संधारण में अहम भूमिका निभा रहे हैं। जिले में विभाग द्वारा नल जल मित्रों को लाईवलीहुड कालेज में आवासीय प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे वे तकनीकी रूप से दक्ष होकर ग्राम पंचायतों में बेहतर सेवाएं प्रदान कर सकें।

कार्यपालन अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी से मिली जानकारी के अनुसार जिले में अब तक तीन प्रशिक्षण बैचों में 90 नल जल मित्रों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद ये नल जल मित्र अपने-अपने ग्राम पंचायत क्षेत्रों में नल-जल योजनाओं के संचालन, पाइपलाइन की छोटी-मोटी मरम्मत, लीकेज सुधार, मोटर एवं वाल्व की देखरेख तथा हैंडपंपों के नियमित संधारण का कार्य कर रहे हैं। इससे ग्रामीणों को पेयजल संबंधी समस्याओं का त्वरित समाधान मिल रहा है और जल योजनाओं का संचालन भी अधिक प्रभावी हुआ है।

ग्राम पंचायतों द्वारा इन नल जल मित्रों को जल प्रदाय योजनाओं और हैंडपंपों के रखरखाव के लिए प्रोत्साहन राशि प्रदान की जा रही है। इसके साथ ही प्रशिक्षण से प्राप्त तकनीकी दक्षता के आधार पर कई नल जल मित्र क्षेत्र के कस्बों एवं गांवों में प्लम्बर के अतिरिक्त कार्य भी कर रहे हैं, जिससे उन्हें अतिरिक्त आय का स्रोत भी मिला है। जिले के बकावंड विकासखंड अतंर्गत कोदामालीगुड़ा ग्राम पंचायत के सरपंच समदूराम कश्यप बताते हैं कि नल जल मित्र फूलसिंह नेताम की बेहतर सेवाओं के फलस्वरूप अब उनके यहां जल स्त्रोतों का बढ़िया रख-रखाव हो रहा है। वहीं लोहण्डीगुड़ा ब्लॉक के कोड़ेबेड़ा सरपंच दुलबंधु कश्यप कहते हैं कि गांव में पेयजल योजनाओं और हैंडपंप के संधारण के साथ ही ग्रामीणों को जागरूक करने में नल जल मित्र मोतीराम ठाकुर अहम भूमिका निभा रहे हैं। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग का उद्देश्य प्रत्येक ग्राम पंचायत में स्थानीय स्तर पर ऐसे प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार करना है, जो पेयजल योजनाओं के रखरखाव की जिम्मेदारी स्वयं निभा सकें। इससे छोटी-छोटी तकनीकी खराबियों के लिए बाहरी कर्मचारियों पर निर्भरता कम होगी, योजनाएं लंबे समय तक सुचारू रूप से संचालित होंगी तथा ग्रामीणों को नियमित और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध हो सकेगा।

यह पहल न केवल ग्रामीण पेयजल व्यवस्था को मजबूत बना रही है, बल्कि स्थानीय युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के नए अवसर भी उपलब्ध करा रही है। प्रशिक्षित नल जल मित्र आज गांवों में जल संरक्षण और पेयजल प्रबंधन के भरोसेमंद साथी के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

नवीन पुल निर्माण आम जनों के लिए बन रहा कालदूत - रोहित पानीग्राही

जगदलपुर (विश्व परिवार)। नगरनार ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के महामंत्री रोहित पानीग्राही ने जारी बयान में कहा आसना से लगे पुराने पुल के समीप बस्तर-बकावंड मार्ग को जोड़ने वाली 43 करोड़ की लागत से निर्माणाधीन नवीन पुल बना 'मौत का कुआं' - ठेकेदार की मनमानी, भ्रष्टाचार एवं प्रशासनिक मौन के खिलाफ तीखा रोष।

बस्तर और बकावंड ब्लॉक के दर्जनों गांवों को जोड़ने वाले मुख्य मार्ग पर निर्माणाधीन नवीन पुल आमजनों के लिए अब सुविधा के बजाय 'मौत का साया' बन चुका है। 43 करोड़ रुपये की भारी-भरकम लागत से बन रहा यह पुल अधिकारियों की घूसखोरी, ठेकेदार की निरंकुशता और सत्ताधारियों की संवेदनहीनता का जीता-जागता प्रमाण है। अधिकारी मजे में हैं और जनता गड्ढे में, यह उक्ति इस निर्माण कार्य पर पूरी तरह चरितार्थ हो रही है।

सुरक्षा मानकों की खुलेआम धज्जियां और जानलेवा लापरवाही: खड़क घाट मुक्तिधाम व आसना के समीप नवीन पुलिया के पिलर के लिए ग्राउंड किए गए लोहे के रॉड खुले में छोड़ दिए गए हैं, जो राहगीरों के लिए किसी भी वक्त एक बड़े और जानलेवा हादसे का कारण बन सकते हैं। अत्यंत खेद का विषय है कि इतनी बड़ी लागत वाले इस प्रोजेक्ट में एप्रोच रोड, रात्रिकालीन प्रकाश व्यवस्था (रेडियम), खतरे के सूचक बोर्ड और बैरिकेडिंग का पूर्णत: अभाव है। ठेकेदार द्वारा एप्रोच रोड पर मुरुम या गिट्टी डालने के बजाय खेत की चिकनी मिट्टी डाल दी गई है। बारिश के कारण यह मार्ग अब कीचड़ और फिसलन भरे पहाड़ में तब्दील हो गया है, जिससे दुपहिया वाहन चालक और राहगीर लगातार गिरकर चोटिल हो रहे हैं। शर्मनाक स्थिति यह है कि जब आम जनता इन गड्ढों में गिर रही है, तब ठेकेदार के गुर्गे और संबंधित अधिकारी उन पर हंस रहे हैं।

प्रशासनिक मिलीभगत और पुराने जर्जर पुल का दुरुपयोग: विदित हो कि पुराने जर्जर पुल पर प्रशासन द्वारा वर्षों से चार-पहिया वाहनों का आवागमन पूर्णत: प्रतिबंधित किया गया है। इसके बावजूद, ठेकेदार अपनी सुविधानुसार पुराने पुल के बैरिकेड खोलकर वहां से भारी निर्माण वाहनों का बेखौफ आवागमन करवा रहा है। यह सीधे तौर पर प्रशासन, एसडीओ (स्छह्र) और ठेकेदार के बीच व्याप्त भ्रष्टाचार और मिलीभगत को उजागर करता है।

जनप्रतिनिधियों का दिखावा और मौन: क्षेत्र के जनप्रतिनिधि और सत्ताधीश इसी मार्ग से रोज गुजरने के बावजूद मूकदर्शक बने हुए हैं। माननीय मंत्री जी केवल निरीक्षण का दिखावा कर निकल जाते हैं, जिससे आम जनता अब न्याय की उम्मीद खो चुकी है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रशासन और जनप्रतिनिधियों को किसी की जान जाने या किसी बड़े हादसे का इंतजार है, जिसके बाद वे केवल धरना, प्रदर्शन या कार्यवाई का फीता काटने पहुंचेंगे।

हमारी प्रमुख मांगें और चेतावनी: हम प्रशासन से यह स्पष्टीकरण मांगते हैं कि: खेत की चिकनी मिट्टी को एप्रोच रोड पर डालने की अनुमति किसने दी और वहां मुरुम/गिट्टी का प्रावधान क्यों नहीं किया गया?

43 करोड़ के इस प्रोजेक्ट में रात्रिकालीन प्रकाश एवं सुरक्षा मानकों की अनदेखी के लिए जिम्मेदार कौन है?

प्रतिबंधित जर्जर पुल से भारी वाहनों के आवागमन की अनुमति प्रशासन ने दी है, या यह विशुद्ध रूप से ठेकेदार की मनमानी है?

यदि जिला प्रशासन और संबंधित विभाग (स्छह्र/लोक निर्माण विभाग) तत्काल प्रभाव से इस पुल निर्माण में सुरक्षा व्यवस्था (प्रकाश, बैरिकेडिंग, एप्रोच रोड का सुदृढ़ीकरण) दुरुस्त नहीं करते हैं और भ्रष्ट ठेकेदार पर अंकुश नहीं लगाते हैं, तो क्षेत्र की जनता उग्र आंदोलन और चक्काजाम करने के लिएहै बाध्य होगी, जिसकी संपूर्ण जिम्मेदारी शासन-प्रशासन की होगी।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
रायपुर, शुक्रवार 24 जुलाई 2026

विधायक भावना बोहरा ने विकास कार्यों का लिया जायजा और सुनीं जनसमस्याएं

■ पंडरिया नगर के विभिन्न वार्डों का भ्रमण, वनांचल ग्रामों में जनचौपाल

पंडरिया (विश्व परिवार)। पंडरिया विधानसभा की विधायक भावना बोहरा ने आज प्रातः नगर पालिका परिषद पंडरिया के विभिन्न वार्डों का दौरा कर चल रहे विकास कार्यों का औचक निरीक्षण किया। पंडरिया नगर में निरिक्षण के दौरान उन्होंने निर्माणाधीन सड़कों, नालियों, चौपाटी, यातायात, स्वच्छता, तालाबों की सफाई, चौक-चौराहों के सौंदर्यीकरण सहित विभिन्न विकास कार्यों की गुणवत्ता एवं प्रगति का जायजा लेते हुए संबंधित अधिकारियों को समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण एवं पारदर्शी ढंग से कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही उन्होंने दूरस्थ व वनांचल ग्राम माठपुर, डालामौहा एवं चिंयाडांड में चौपाल लगाकर ग्रामवासियों से संवाद किया और उनकी समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिए अधिकारीयों को निर्देशित किया।

इस अवसर पर भावना बोहरा ने कहा कि डबल इंजन की भाजपा सरकार जनता की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को केंद्र में रखकर विकास कार्यों को गति दे रही है। पंडरिया नगर में वर्षों से लंबित और बहुप्रतीक्षित मांगों को प्राथमिकता के साथ पूरा किया जा रहा है। हमारा संकल्प प्रत्येक नागरिक तक योजनाओं और विकास एवं अधोसंरचना निर्माण से बेहतर सुविधाओं का लाभ पहुँचाना है। आज पंडरिया नगर में सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई और प्रशासनिक ढांचे के साथ न्यायिक अधोसंरचना को भी नई मजबूती मिल रही है। भाजपा की सरकार बनने के बाद विगत वर्षों में पंडरिया विधानसभा में 1000 करोड़ से अधिक के विकास व अधोसंरचना निर्माण एवं जनसुविधाओं के विस्तार हेतु कार्य हो रहें हैं जिसमें कई कार्य पूर्ण हो चुके हैं और कुछ कार्य प्रगतिरत हैं। पंडरिया नगर में भी जनता की बहुप्रतीक्षित मांग हरिनाल पुल निर्माण, पंडरिया बाईपास, पंडरिया नगर मुख्य मार्ग का निर्माण, बिसेसरा नाला से हरिनाला तक सड़क निर्माण, नवीन नगर पालिका भवन, 250 सीटर नालंदा परिसर लाइब्रेरी, नवीन व्यवहार न्यायालय (सिविल कोर्ट) भवन निर्माण, व्यावसायिक परिसर, मिनी स्टेडियम, चौक-चौराहों का सौन्दर्यीकरण, हर वार्ड व प्रमुख सड़कों के निर्माण तथा पंडरिया विधानसभा के प्रत्येक गाँव तक सड़क, नाली,पुल-पुलिया, बिजली, प्रकाश व्यवस्था व पेयजल सुविधा जैसे जनसुविधाओं के विस्तार एवं विकास कार्यों से पंडरिया नगर आज विकास के नए अध्याय लिख रहा है और समृद्धि हो रहा है।

विधायक भावना बोहरा ने कहा कि नगरीय निकाय क्षेत्रों के साथ-साथ दूरस्थ वनांचल एवं आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र भी निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर हो रहें हैं जिसका प्रत्यक्ष लाभ हमारे आदिवासी भाई-बहनों को मिल रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व एवं मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय जी के मार्गदर्शन में डबल इंजन भाजपा सरकार ने इन क्षेत्रों के विकास को नई दिशा और नई गति दी है। आज जिन गाँवों में वर्षों तक सड़क, पुल-पुलिया, बिजली, पेयजल, आवास और अन्य मूलभूत सुविधाओं का अभाव था, वहाँ तेज़ी से विकास कार्य हो रहे हैं। पंडरिया विधानसभा के दूरस्थ वनांचल एवं आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में विकास के एक नए युग की शुरुआत हुई है।

मधुसूदन यादव ने यातायात नगर जीर्णोद्धार कार्य का किया निरीक्षण

■ निर्माण में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखने तथा कार्य मे तेजी लाने के दिये निर्देश

■ यातायात नगर के शेष भुखण्डो का प्रीमियम निर्धारण करने कहा

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। शहर में चल रहे विकास कार्य निरीक्षण की कडी में महापौर श्री मधुसूदन यादव आयुक्त श्री जी.आर. मरकाम, निगम अध्यक्ष श्री टोपेन्द्र सिंह पारस वर्मा,लोक निर्माण विभाग के प्रभारी सदस्य श्री सावन वर्मा, राजस्व विभाग के प्रभारी सदस्य श्री राजा माखीजा, पार्षद श्री अमित कुशवाहा व श्री अरूण साहू, पूर्व पार्षद श्री शरद सिन्हा तथा निगम के तकनीकि व राजस्व अधिकारियो के साथ यातायात नगर जीर्णोद्धार कार्य का निरीक्षण कर कार्य में तेजी लागर गुणवत्ता के साथ समय सीमा में काम पूर्ण करने के निर्देश अधिकारियों को दिये। साथ ही उन्होंन यातायात नगर के शेष भूखण्डो का प्रीमियम निर्धारण करने कहा।

यातायात नगर जीर्णोद्धार कार्य का निरीक्षण कर महापौर श्री यादव उद्यान निर्माण कार्य देख, कहा कि उद्यान में सभी आवश्यक सुविधाओ का समावेश हो इसका विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होने कहा कि यातायात नगर पुराना होने के साथ साथ जर्जर स्थिति में आ गया है, जिसके जीर्णोद्धार के लिए शासन को प्रस्ताव भेजा गया था शासन ने बजट प्रावधान किया और नगरीय प्रशासन विभाग की स्वीकृति अनुसार यातायात नगर का जीर्णोद्धार कराया जा रहा है। जिसके तहत रोड, नाली, पार्किंग स्थल मरम्मत कर डामरीकरण किया जायेगा तथा स्ट्रीट लाईट मरम्मत कर हॉईमास्क लाईट लगायी जायेगी। सामुदायिक भवन, शौचालय की सुविधा के अलावा पानी की समुचित व्यवस्था की जावेगी।

महापौर ने कहा कि प्रवेश द्वार के आगमन एवं निर्गमन में गार्ड रूप का निर्माण कराना है, जल भराव स्थल का भरान कर पेवर ब्लाक लगाना है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री स्वावलंबन योजनांतर्गत निर्मित दुकनो के पास सीमेंटिकरण कर डिवाईडर एवं रोड साईड रंगाई पोताई करना है। उन्होंने कहा कि शासन की मंशानुरूप यातायात नगर को दुरूस्त कर विकसित करना है।

रायपुर विकास प्राधिकरण ने दोहरे आबंटन के 6 प्रकरणों का किया निराकरण

■ RDA अध्यक्ष नंद कुमार साहू ने हितग्राहियों को सौंपे संशोधित आबंटन ज्ञापन

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर विकास प्राधिकरण की संचालक मंडल की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुरूप प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत विभिन्न आवासीय योजनाओं में दोहरे आबंटन एवं सहमति के आधार पर प्राप्त प्रकरणों का कर उनका परीक्षण निराकरण किया गया। दोहरे रमने बनाया है, हम ही लेंगे। आबंटन संबंधी मामलों के निराकरण हेतु गठित समिति द्वारा प्रत्येक प्रकरण का गुण-दोष के आधार पर परीक्षण कर अनुशंसा की गई, जिसके आधार पर संबंधित हितग्राहियों को संशोधित आबंटन प्रदान किया गया। इसी क्रम में शारदा यादव को कौशल्या माता विहार (कमल विहार) योजना के सेक्टर - 04 स्थित ईडब्ल्यूएस (2 बीएचके) श्रेणी में ब्लॉक-D के फ्लैट क्रमांक फ्लैट क्रमांक - 713 आबंटित कर समायोजित किया गया।

714 के स्थान पर उसी ब्लॉक का इसी प्रकार कुल 06 प्रकरणों का निराकरण करते हुए हितग्राहियों की सहमति एवं समिति की अनुशंसा के आधार पर स्नेहा शर्मा, उमा द्विवेदी, सुशीला ठाकुर, प्रतिभा साहू तथा सुभाष्मिता पाढ़ी को रायपुर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष नंद कुमार साहू एवं उपाध्यक्ष डॉ. जे.पी. शर्मा द्वारा संशोधित आबंटन ज्ञापन प्रदान किया गया। इस अवसर पर उन्होंने हितग्राहियों को शीघ्र रजिस्ट्री की प्रक्रिया पूर्ण कर आवास का कब्जा प्राप्त करने तथा अपने स्वयं के घर में सुखद एवं सुरक्षित जीवन प्रारंभ करने के लिए शुभकामनाएं दीं।

सडक में रेत गिट्टी व मलमा का ढेर, मलमा मण्डप के तहत संबंधितो पर जुर्माना

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। शहर को स्वच्छ एवं साफ रखने की दिशा में नगर निगम का अमला साफ सफाई के अलावा प्रतिबंधित प्लास्टिक का उपयोग करने तथा सडक में बिल्डिंग मटेरियल व मलमा रखने पर मलमा मण्डप के तहत निगम आयुक्त श्री जी.आर. मरकाम के निर्देश पर कार्यवाही कर रही है। कार्यवाही की कडी में निगम का स्वास्थ्य अमला द्वारा मलमा मण्डप के तहत गुरूद्वारा रोड एवं अवाना होटल के पास रोड में रेत, गिट्टी बिल्डिंग मटेरियल एवं मलमा रखने पर संबंधित से 5-5 सौ रूपये जुर्माना वसूला गया।

आयुक्त श्री मरकाम ने बताया कि कतिपय लोगों के द्वारा सड़क पर तथा अपने आवास व दुकानों के सामने बिल्डिंग मटेरियल, मलमा एवं दुकानों का समान रखकर सडक में अतिक्रमण कर लिया जाता है, जिससे आवागमन बाधित होने के साथ साथ गंदगी फैलती है। जिसे ध्यान में रखते हुये नगर निगम का अतिक्रमण दस्ता प्रतिदिन निरीक्षण कर कार्यवाही कर रही है, कार्यवाही के तहत गुरूद्वारा रोड में श्री जगदीश खोमानी द्वारा रेत गिट्टी, बिल्डिंग मटेरियल रोड पर रखने तथा इलाहाबाद बैंक रोड अवाना होटल के पास श्रीमती अनिता बग्गा द्वारा मलमा रखने पर मटेरियल व मलमा हटाने समझाईस देकर 5-5 सौ रूपये अर्थदण्ड अधिरोपित किया गया।

आयुक्त श्री मरकाज ने नागरिकों एवं दुकानदारों से अपील करते हुये कहा है कि बिल्डिंग मटेरियल व मलमा सड़क पर न रखे एवं अपने दुकान का समान दुकान की सीमा में रखे तथा प्रतिबंधित प्लास्टिक का उपयोग न करे, अन्यथा जसी करते हुये अर्थदण्ड की कार्यवाही की जायेगी।

भिलाई स्टील प्लांट की खदानों में खान सुरक्षा प्रबंधन योजना कार्यशाला का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। भिलाई स्टील प्लांट के छत्तीसगढ़ समूह की खानों के लिए आयोजित पांच दिवसीय खान सुरक्षा प्रबंधन योजना (एमएसएमपी) - कार्यान्वयन और समीक्षा प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला अपने व्यावहारिक कार्यान्वयन चरण में प्रवेश कर चुकी है, जो खान सुरक्षा प्रणालियों को मजबूत करने और खनन कार्यों में एक सक्रिय सुरक्षा संस्कृति को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

21 जुलाई 2026 को शुरू हुई इस कार्यशाला का उद्देश्य खान सुरक्षा प्रबंधन योजना (एमएसएमपी) के कार्यान्वयन को बढ़ाना, वैधानिक सुरक्षा प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करना और सुरक्षित, टिकाऊ और दुर्घटना-मुक्त खनन कार्यों को प्राप्त करने के लिए व्यवस्थित जोखिम प्रबंधन को बढ़ावा देना है।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, कार्यकारी निदेशक (खान) कमल भास्कर और मुख्य महाप्रबंधक (खान) आरबी गहरवार ने इस बात पर जोर दिया कि खान सुरक्षा प्रबंधन योजना का प्रभावी कार्यान्वयन सुरक्षित और कुशल खनन की नींव है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि कार्यबल की सुरक्षा सुनिश्चित करने और सभी खानों में सुरक्षा प्रदर्शन को मजबूत करने के साथ-साथ परिचालन उत्कृष्टता के लिए एक संरचित और सक्रिय सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली आवश्यक है।

पहले दो दिनों के दौरान, दत्ता माइनिंग कंसल्टेंसी के सुरक्षा विशेषज्ञ और खान सुरक्षा के पूर्व उप महानिदेशक एस.के. दत्ता ने राजहारा मशीनीकृत खानों, डल्ली मशीनीकृत खानों, झारंदल्ली खानों, महामाया खानों, हिर्री खानों, कलवार खानों, रौघाट खानों और नंदिनी चूना पत्थर खानों का प्रतिनिधित्व करने वाले अधिकारियों और वरिष्ठ पर्यवेक्षकों के लिए व्यापक कक्षा सत्र आयोजित किए।

वार्डवासियो को प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का लाभ देने बैठक आयोजित

■ वार्डवासियो को ऊर्जा उपभोक्ता से ऊर्जा दाता बनने महापौर ने की अपील

राजनांदगांव (विश्व परिवार)। भारत सरकार की प्रमुख योजनाओ में लाभकारी योजना प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना का क्रियान्वयन शहर में किए जाने तथा घरेलू बिजली बिलो में कटौती करने सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने व्यापक प्रचार प्रसार किया जा रहा है, ताकि योजना का लाभ उपभोक्ताओ को अधिक से अधिक मिल सके। इसी तारतम्य में आज महापौर मधुसूदन यादव की अध्यक्षता में गुरू गोविंद सिंह वार्ड नं. 23 में बैठक लेकर वार्डवासियो से ऊर्जा उपभोक्ता से ऊर्जा दाता बनने अपील कर उन्हें योजना के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गयी। इस अवसर पर निगम आयुक्त जी.आर. मरकाम, राजस्व विभाग के प्रभारी सदस्य व वार्ड पार्षद राजा माखीजा, पूज्य सिंधी पंचायत के अध्यक्ष मंशाराम मोटलानी विशेष रूप से उपस्थित रहे। महापौर यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अनेक जन कल्याणकारी योजना लागू की जिसमें प्रधानमंत्री सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना सबसे महत्वपूर्ण योजना है।

डोमिनोज पिज्जा दुकान की स्वच्छता व्यवस्था का किया औचक निरीक्षण

■ गन्दगी मिलने पर किया 10 हजार रूपये का जुर्माना

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर नगर पालिक निगम जोन क्रमांक 10 स्वास्थ्य विभाग द्वारा स्वच्छता से सम्बंधित प्राप्त जनशिकायत की वस्तुस्थिति की जानकारी लेने जोन 10 क्षेत्र अंतर्गत डुमरतराई में स्थित लक्ष्मीकांत डोमिनोज पिज्जा दुकान की स्वच्छता व्यवस्था का औचक निरीक्षण नगर निगम आयुक्त श्री संबित मिश्रा के निर्देश पर जोन 10 जोन कमिश्नर श्री मोनेश्वर शर्मा के मार्गदर्शन में किया गया.

स्वच्छता व्यवस्था के औचक निरीक्षण के दौरान गन्दगी पायी गयी , चारों ओर खाने की सामग्रियों पर मक्खीयों का भिनभिनाना पाया गया और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम का उल्लंघन पाया गया. इस पर प्राप्त जनशिकायत स्थल पर पूरी तरह सही मिलने पर जोन 10 जोन कमिश्नर श्री मोनेश्वर शर्मा के निर्देश पर जोन 10 जोन स्वास्थ्य अधिकारी श्री अमित बेहरा द्वारा स्थल पर स्वच्छता निरीक्षक श्री यशवंत बेरिहा, श्री राहुल वैष्णव, श्री लक्की पाल की उपस्थिति में लक्ष्मीकांत डोमिनोज पिज्जा दुकान डुमरतराई के सम्बंधित संचालक को भविष्य के लिए नियमानुसार कड़ी चेतावनी देते हुए स्वच्छता दीदियों की स्थल पर उपस्थिति में तत्काल 10 हजार रूपये का ई जुर्माना किया और प्राप्त जनशिकायत का जोन के स्तर पर नगर निगम जोन 10 स्वास्थ्य विभाग द्वारा त्वरित निदान किया गया।

दिल्ली में पत्रकारों पर हमले की छत्तीसगढ़ के प्रमुख प्रेस क्लबों ने की कड़ी निंदा

रायपुर (विश्व परिवार)। कोरबा प्रेस क्लब की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह के अवसर पर आयोजित बैठक में छत्तीसगढ़ के प्रमुख प्रेस क्लबों के अध्यक्षों ने नई दिल्ली के जंतर-मंतर में कवरेज के दौरान पत्रकारों के साथ हुई हिंसक घटनाओं की एक स्वर में कड़ी निंदा की तथा दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की मांग की।

बैठक में रायपुर प्रेस क्लब के अध्यक्ष मोहन तिवारी ने पत्रकारों पर हो रहे हमलों के विरोध में निंदा प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव का बिलासपुर प्रेस क्लब के अध्यक्ष अभिजीत मिश्रा, कोरबा प्रेस क्लब के अध्यक्ष नौशाद खान ने समर्थन किया , इस मौके पर बिलासपुर, कोरबा के वरिष्ठ पत्रकारों और प्रेस क्लब पदाधिकारियों कवरेज के दौरान पत्रकारों पर हिंसा को चिंता जनक बताया और सभी प्रेस क्लब अध्यक्षों ने सर्वसम्मति बना कर ऐसी घटना की निंदा करने का सुझाव रखा। बैठक में वरिष्ठ पत्रकारों ने कहा कि जंतर-मंतर में कवरेज कर रहे वरिष्ठ पत्रकारों रोहित रंजन, देव कोटक, शेफाली, आर्यन आनंद, लोकेश ठाकुर एवं अन्य मीडियाकर्मियों के साथ मारपीट, मोबाइल एवं घड़ी छीनने, कपड़े फाड़ने तथा पत्रकारिता के उपकरणों को नुकसान पहुंचाने जैसी घटनाएं न केवल निंदनीय हैं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों पर भी सीधा आघात हैं। बैठक में इस बात पर गहरी चिंता व्यक्त की गई कि देशभर में पत्रकारों के साथ हिंसा की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं।

नगर निगम ने रेल्वे स्टेशन मार्ग हनुमान मन्दिर के पास जर्जर भवन को हटाया

रायपुर। रायपुर नगर पालिक निगम जोन 2 नगर निवेश विभाग की टीम द्वारा नगर निगम आयुक्त श्री संबित मिश्रा के निर्देश पर नगर निगम जोन 2 जोन कमिश्नर श्री संतोष पाण्डेय के मार्गदर्शन एवं कार्यपालन अभियंता श्री पी. डी. धृतलहरे, उपअभियंता नगर निवेश श्रीमती अंजलि बारले की उपस्थिति में नगर निगम जोन 2 क्षेत्र अंतर्गत रेल्वे स्टेशन मार्ग में हनुमान मन्दिर परिसर के समीप लगभग 700 वर्गफीट क्षेत्र में एक जर्जर भवन को जनहित में जनजीवन सुरक्षा की दृष्टि से जेसीबी मशीन की सहायता से तोड़ने की कार्रवाई की गयी।

कलिंगा विश्वविद्यालय में 'अल्ट्राटेक सेंटर ऑफएक्सीलेंस' का भव्य उद्घाटन

रायपुर (विश्व परिवार)। कलिंगा विश्वविद्यालय और अल्ट्राटेक सीमेंट की एक संयुक्त पहल के तहत परिसर में 'अल्ट्राटेक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' का भव्य उद्घाटन किया गया। यह विश्वविद्यालय का 8वां 'सेंटर ऑफ एक्सीलेंस' (उत्कृष्टता केंद्र) है, जिसे सिविल इंजीनियरिंग के छात्रों को उद्योग-उपयोगी तकनीकी ज्ञान, व्यावहारिक प्रशिक्षण (हैंड्स-ऑन ट्रेनिंग) और करियर-उन्मुख कौशल से लैस करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है।

उद्घाटन समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि यशवंत कुमार (प्रधान महालेखाकार - AG ऑफिस) तथा विशिष्ट अतिथि श्री शीतांशु शेखर (महाप्रबंधक, नाबार्ड) द्वारा अल्ट्राटेक के वरिष्ठ अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति में पारंपरिक दीप प्रज्वलन के साथ हुआ।

समारोह में प्रमुख महानुभावों की उपस्थिति

अल्ट्राटेक सीमेंट: प्रतीक झा (जोना हेड) एवं रमन शर्मा (रीजनल हेड)।

कलिंगा विश्वविद्यालय: प्रो. डॉ. आर. श्रीधर (कुलपति), डॉ. बायजू जॉन (महानिदेशक), प्रो. डॉ. मोनिका सेठी शर्मा (प्रतिकुलपति), डॉ. संदीप गांधी (कुलसचिव) एवं पंकज तिवारी (निदेशक - कॉर्पोरेट रिलेशंस)।

कार्यक्रम की झलकियां व विचार

समारोह का संचालन लेफ्टिनेंट विभा चंद्राकर (प्रभारी, अधिष्ठाता छात्र कल्याण) द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया। इसके उपरांत, अतिथियों ने नवनिर्मित सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का दौरा किया। कार्यक्रम की शुरुआत में विज्ञान संकाय की सहायक प्राध्यापक सुश्री अभिसस्मिता रॉय द्वारा एक स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। मुख्य अतिथि श्री यशवंत कुमार ने कहा कि अल्ट्राटेक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का उद्घाटन केवल एक नई सुविधा की शुरुआत नहीं है, बल्कि यह निर्माण उद्योग के लिए एक अत्यधिक कुशल कार्यबल (वर्कफोर्स) तैयार करके 'आत्मनिर्भर भारत' और 'विकसित भारत' के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

विशिष्ट अतिथि श्री शीतांशु शेखर (महाप्रबंधक, नाबार्ड) ने कहा कि यह उत्कृष्टता केंद्र युवाओं को भविष्य की औद्योगिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

डॉ. संदीप गांधी (कुलसचिव) ने अपने संबोधन में कहा कि इस केंद्र को भविष्य की औद्योगिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है।

अमृत 2.0 'कैच द रेन' अभियान के तहत शहरी जल संरक्षण में कोरबा राष्ट्रीय मॉडल बनकर उभरा

कोरबा (विश्व परिवार)। आवास और शहरी कार्य मंत्रालय (MoHUA) की प्रमुख पहल 'कैच द रेन - वेयर इट फॉल्स, व्हेन इट फॉल्स' (अमृत 2.0) के तहत जल संरक्षण, भूजल पुनर्भरण और जल निकायों के कायाकल्प में छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले ने एक विशिष्ट राष्ट्रीय पहचान बनाई है। हसदेव नदी के तट पर स्थित होने और अपने कोयला खनन व थर्मल पावर इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध होने के बावजूद, कोरबा ऐतिहासिक रूप से शुष्क मौसम के दौरान गंभीर मौसमी जल संकट से जूझता रहा है। इन चुनौतियों को पहचानते हुए, छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में आवास और शहरी कार्य मंत्रालय की इस फ्लैगशिप पहल (अमृत 2.0) को लागू किया गया।

कोरबा की सफलता का मुख्य आधार उच्च-सटीकता वाले भू-स्थानिक विज्ञान पर इसकी निर्भरता है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र (NRSC) ने 10 ऐसे अति-संवेदनशील स्थलों की पहचान करने के लिए व्यापक फील्ड अध्ययन और सैटेलाइट मैपिंग की, जहाँ जल स्तर काफी नीचे चला गया था और बारिश के मौसम में पानी नालियों से बहकर व्यर्थ ही नदी में चला जाता था। भूजल स्तर को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से, मैपिंग के बाद इन 10 स्थानों को विशेष रूप से डिजाइन की गई शैलो एक्विफर मैनेजमेंट (SAM) प्रणालियों से लैस किया गया, जिसमें दो महत्वपूर्ण घटक शामिल हैं: मल्टी-स्टेज डिसिल्टेशन यूनिट्स: इसमें लगे बजरी और रेत के क्षैतिज फिल्टर सतही बहाव के पानी को रोककर भारी गाद, मलबे और शहरी प्रदूषकों को भूजल में प्रवेश करने से पहले ही छान लेते हैं।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे

वैगनों का आरओएच कार्य हेतु निविदा सूचना

निविदा सूचना संख्या एण्ड दिनांक: एम-आर-ईटी-ईएक्स-बीआईए-26-27-01.
कार्य का नाम: एक्सचेंज यार्ड भिलाई 600 बोस्ट एवं 400 बी.आर.एन. वैगनों का आरओएच। **निविदा मूल्य:** ₹ 10,81,48,525.00. **बयाना राशि:** ₹ 21,63,000.00. **निविदा प्रपत्र का मूल्य:** ₹ 0।
निविदा बंद होने की तिथि: 13.08.2026 के **15.00** बजे।
मेनूअल ऑफर स्वीकार्य नहीं होगा तथा उसे यथावत निरस्त माना जावेगा।
विस्तृत विवरण/निविदा दस्तावेज की खरीद, पात्रता मानदंड एवं उपरोक्त कार्य के पूर्ण विवरण हेतु कृपया वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर(फ्रेट)/बीआईए/दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, रायपुर के कार्यालय से संपर्क करें अथवा हमारे वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर 15.07.2026 से उपलब्ध निविदा दस्तावेजों देखें/ डाउनलोड करें।
वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर(फ्रेट)/ भिलाई, द.पू.म.रे. रायपुर
PR/R/SR.DME(FRT/BIA)/PCN/149
South East Central Railway @secrail

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
रायपुर, शुक्रवार 24 जुलाई 2026

जिले में अब तक 2528.7 मिमी वर्षा दर्ज

राजनांदगांव। राजनांदगांव जिले में इस वर्ष चालू मानसून वर्ष में 1 जून 2026 से अब तक जिले के सभी 7 तहसीलों में 2528.7 मिमी बारिश एवं औसत 361.2 मिमी बारिश दर्ज की गई है। भू-अभिलेख से प्राप्त जानकारी अनुसार डोंगरगढ़ तहसील में 364.2 मिमी, लाल बहादुर नगर तहसील में 397.5 मिमी, राजनांदगांव तहसील में 482.8 मिमी, घुमका तहसील में 253 मिमी, छुरिया तहसील में 300.3 मिमी, कुमरदा तहसील में 408.6 मिमी, डोंगरगांव तहसील में 322.3 मिमी बारिश दर्ज की गई है। अब तक सर्वाधिक वर्षा राजनांदगांव तहसील में 482.8 मिमी दर्ज की गई है। इसी तरह आज राजनांदगांव जिले के सभी 7 तहसीलों में 405.8 मिमी एवं औसत 58 मिमी बारिश दर्ज की गई है।

देश के युवाओं का हित और उनका भविष्य हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता हैः किरण देव

- ‘केन्द्र सरकार सदन में चर्चा के लिए तैयार है लेकिन कांग्रेस और उसके नेता चर्चा करने से भाग रहे हैं’
- ‘कांग्रेस के नेता देश की एकता, अखंडता, समरसता को खण्डित करने का काम कर रहे हैं’

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष किरण देव ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के लिए छात्रों का हित सबसे महत्वपूर्ण है और वे इसे सर्वोच्च प्राथिमिकता देते हुए निर्णय ले रहे हैं। देश के युवाओं का हित और उनका भविष्य हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। श्री देव ने भाजपा प्रदेश कार्यालय (कुशाभाऊ ठाकरे परिसर) में गुरुवार को आहूत पत्रकार वार्ता करते हुए कहा कि युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ करने वाले किसी भी व्यक्ति को बख्शा नहीं जाएगा।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री देव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने छात्रों के इस आंदोलन में अपने कार्यकर्ताओं की घुसपैठ करा कर छात्रों के आंदोलन का स्वरूप ही बदल दिया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने इस विषय को पहले दिन से ही गंभीरता से लेकर यह निर्णय किया है कि छात्रों का हित सर्वोपरि है व उनके नुकसान की भरपाई भी होगी। श्री देव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी के नेताओं का भाषण हमेशा प्रधानमंत्री श्री मोदी के विरोध में होता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के लिए कांग्रेसी नेताओं ने भाषणों में अभद्र शब्दों का प्रयोग किया है। यह लोकतांत्रिक पद्धति नहीं है। प्रजातंत्र में यह स्वीकार्य नहीं है। संवैधानिक पद पर बैठे प्रधानमंत्री के लिए गालियों का प्रयोग करना यह हमारे देश के संस्कार नहीं हैं। यह हमारी संस्कृति और सभ्यता नहीं है। श्री देव ने कहा कि केन्द्र सरकार सदन में छात्रों के हितों को लेकर चर्चा के लिए तैयार है लेकिन कांग्रेस पार्टी और उसके नेता सदन में चर्चा करने से भाग रहे हैं। सदन की कार्यवाही को बार-बार बाधित करने का काम कर रहे हैं। कांग्रेस पार्टी सदन में चर्चा नहीं करना चाहती और इन्हीं के घटक दल समाजवादी पार्टी के नेता कहते हैं कि उनकी वह जानें, हमको तो चर्चा करनी है। यह समझ से परे हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री देव ने कहा कि राहुल गांधी हाथ में संविधान की किताब लेकर घूमते हुए लोगों को दिग्भ्रमित कर रहे हैं।

‘संविधान खतरे में है’ कहकर संविधान को खतरे में डालने का काम कांग्रेस पार्टी ने किया है। प्रधानमंत्री आवास के सामने बिना किसी पूर्व सूचना के अपनी आन्तरिक योजना के आधार पर अपने कांग्रेसी साथियों के साथ वहाँ पर धरने पर बैठ गए, जबकि वह पूरा क्षेत्र संवेदनशील क्षेत्र है। वहाँ पर किसी भी प्रकार का धरना-प्रदर्शन प्रतिबंधित है।

सांसद बृजमोहन ने किसानों की आर्थिक सुरक्षा और उनकी उपज का सही मूल्य दिलाने का मुद्दा उठाया

- किसानों की उपज का मिले सही मूल्य, ऑपरेशन ग्रीन्स को रियल-टाइम और किसान-केंद्रित बनाने की सांसद बृजमोहन की मांग

रायपुर/नई दिल्ली (विश्व परिवार)। रायपुर लोकसभा क्षेत्र से वरिष्ठ सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने गुरुवार को संसद में ऑपरेशन ग्रीन्स काके तहत छत्तीसगढ़ सहित देशभर के सब्जी और फल उत्पादक किसानों की आर्थिक सुरक्षा और उनकी उपज का सही मूल्य दिलाने का मुद्दा उठाया।

सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय तथा कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय से छत्तीसगढ़ के आकांक्षी जिलों का उल्लेख करते हुए ‘ऑपरेशन ग्रीन्स’ योजना और बाजार अंत:क्षेप योजना (MIS) के क्रियान्वयन को लेकर सवाल उठाए।

सांसद श्री बृजमोहन ने पूछा कि छत्तीसगढ़ के आकांक्षी (Aspirational) जिलों में टमाटर और फलों की कीमतों में गिरावट के दौरान किसान उत्पादक संगठनों (FPO) द्वारा 50% परिवहन और भंडारण सब्सिडी का कितना लाभ उठाया गया है?

APMC के पुराने आंकड़ों पर निर्भरता के कारण मूल्य समर्थन तंत्र में देरी होती है, जिससे किसानों को मजबूरी में कम दामों में उपज बेचनी पड़ती है। ऐसे में सांसद ने मांग की कि संपदा (SAMPADA) पोर्टल को ‘ई-नाम’ (e-NAM) के साथ रियल-टाइम एकीकृत किया जाए तथा देरी से मिलने वाली प्रतिपूर्ति (Reimbursement) के स्थान पर किसानों को तुरंत अग्रिम वित्तीय सहायता/वाउचर प्रदान करने की व्यवस्था बनाई जाए।

जिस पर खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री श्री रवनीत सिंह ने बताया कि, कृषि और किसान कल्याण विभाग द्वारा संचालित ‘प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान’ के तहत बाजार अंत:क्षेप योजना (MIS) लागू की गई है।

बंपर पैदावार के समय जब बाजार मूल्य उत्पादन लागत से 10% या उससे अधिक गिर जाता है, तब केंद्र और राज्य सरकार 50:50 के अनुपात में किसानों के नुकसान की भरपाई और परिचालन खर्चों का वहन करती हैं।

डंडे से प्रहार भी हम पर और एफआईआर भी हम पर, शर्म करो सरकार: दीपक बैज

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने राजीव भवन में पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि कल राज्य सरकार के मंत्रियों ने भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ कांग्रेस के मुख्यालय राजीव भवन में हमला बोला। इस हमले के बाद पुलिस ने शाम को हमारे कार्यकर्ताओं के खिलाफझूठी एफ्आईआर दर्ज किया है। हमला हमारे दफ्तर पर हुआ है। वाटर कैनन भी हम पर, आंसू गैस भी हम पर, पत्थर और डंडे से प्रहार भी हम पर और एफ्आईआर भी हम पर। घटना के जितने भी वीडियो है वह बता रहे कि सारे आक्रमण, सारे पत्थर आदि भाजपा की तरफसे कांग्रेस की तरफआ रहे थे। पुलिस ने एक तरफा कार्यवाही क्यों किया? मंत्री गण भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ हमारे कार्यालय आये थे हम पर हमला हुआ और हमारे खिलाफएफ्आईआर दर्ज किया जाना बताता है कि पुलिस भाजपा की अनुषांगिक संगठन बन गयी है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि आपत्तिजनक है कि कांग्रेस कार्यालय पर किये गये हमले में भाजपा सरकार के सभी मंत्री शामिल थे। मंत्री गण जिनके ऊपर राज्य के लोगों की सुरक्षा और कानून व्यवस्था बना कर रखने की जवाबदारी है। वे सारे मंत्री विपक्षी दल के दफ्तर पर हमला करने आये थे। मंत्रियों ने संविधान की शपथ और सम्यक भाव से अपने कर्तव्य के निर्वहन की जो शपथ ली है उसका उल्लंघन है। इन मंत्रियों का चरित्र अलोकतांत्रिक है, इन मंत्रियों को तत्काल बर्खास्त किया जाना चाहिए। भाजपा ने सत्ता के दंभ में सारी लोकतांत्रिक मर्यादाओं को तार-तार किया है।

संत रविदास की 650वीं जयंती: भाजपा की कार्यशाला संपन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी के कुशाभाऊ ठाकरे परिसर स्थित प्रदेश कार्यालय में संत शिरोमणि रविदास महाराज जी की आगामी 650वीं जयंती के पावन अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों और अभियानों की रूपरेखा तैयार करने हेतु एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में संत रविदास जी के विचारों, सामाजिक समरसता के संदेश और उनके जीवन दर्शन को जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रस्तावित कार्यक्रमों को अंतिम रूप दिया गया।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण देव ने कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए कहा कि संत रविदास जी ने अपने विचारों और शिक्षा के माध्यम से समाज से भेदभाव को मिटाकर समरसता का संदेश दिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में वाराणसी में संत रविदास जी का भव्य स्मारक आकार ले रहा है, जो उनकी विरासत को सहेजने का ऐतिहासिक कार्य है। इस उपलक्ष्य में भाजपा की एक विशेष टीम 27 तारीख को वाराणसी जाकर वहाँ से कलश में पवित्र माटी एवं जल लेकर छत्तीसगढ़ आएगी। इस पवित्र जल और माटी को प्रदेश के सभी प्रमुख देव स्थलों और मंदिरों में ले जाया जाएगा, जहाँ विशेष सांस्कृतिक व धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता गुरु प्रकाश पासवान ने कहा कि संत रविदास एक ऐसे महान संत थे जिन्होंने श्रम की प्रतिष्ठा, समानता और मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि रखा। उनके बताए मार्ग पर चलते हुए केंद्र सरकार समाज के अंतिम व्यक्ति के कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने बताया कि वाराणसी स्थित संत रविदास जी के भव्य स्मारक स्थल से 27 तारीख को कलश में लाई जाने वाली पवित्र माटी और जल को छत्तीसगढ़ के कोने-कोने में पहुँचेगा। मंदिरों और देव स्थलों पर होने वाले इन कार्यक्रमों के माध्यम से जन-जन तक संत रविदास जी के विचारों और संदेशों को पहुँचाया जाएगा। राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री पासवान ने बताया कि जयंती वर्ष के दौरान प्रदेशभर में सामाजिक समरसता यात्राओं, विचार गोष्ठियों और संत रविदास जी की शिक्षाओं पर आधारित कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

गैर वातानुकूलित स्लीपर श्रेणी के यात्रियों के लिए बेड रोल की सुविधा

- रायपुर रेल मंडल के अमरकंटक एक्सप्रेस में स्लीपर श्रेणी के यात्रियों के लिए भुगतान आधारित बेड रोल सुविधा

रायपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का रायपुर रेल मंडल यात्रियों को सुरक्षित, आरामदायक एवं गुणवत्तापूर्ण यात्रा सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयासरत है । इसी क्रम में गाड़ी संख्या 12853/12854 दुर्गभोपालदुर्ग अमरकंटक एक्सप्रेस के स्लीपर श्रेणी के यात्रियों के लिए भी भुगतान आधारित बेड रोल सुविधा प्रारंभ की गई है। इस सुविधा के अंतर्गत यात्री निर्धारित शुल्क का भुगतान कर अपनी आवश्यकता के अनुसार बेड रोल प्राप्त कर सकते हैं।

यात्रियों की विभिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए

03 प्रकार के बेड रोल पैकेट उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

02 बेडशीट + 01 तकिया + 01 तकिया कवर 70 रुपए मात्र

02 बेडशीट – 40 रुपए मात्र

01 तकिया + 01 तकिया कवर – 30 मात्र

यात्रियों की सुविधा के लिए ट्रेन में नियुक्त बेड रोल अटेंडेंट स्लीपर कोचों में नियमित रूप से भ्रमण करते हैं तथा यात्रियों की मांग के अनुसार बेड रोल उपलब्ध कराते हैं।

अधिकारियों ने किया राष्ट्रीय स्मारक भांडदेवल का भ्रमण

आरंग। गुरुवार को जिले के अधिकारियों ने राष्ट्रीय स्मारक भांडदेवल का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान अधिकारियों ने मंदिर के इतिहास, स्थापत्य कला और पुरातात्विक महत्व की जानकारी ली। और मंदिर की सुंदरता, प्राचीनता और भव्यता देख काफी प्रफूल्लित होकर पुन: यहां आने इच्छा जाहिर की। भ्रमण में जिला शिक्षा कार्यालय रायपुर से सहायक परियोजना अधिकारी इंदिरा गांधी,एपीसी पूनम तिवारी एवं निशा शर्मा सहायक परियोजना समन्वयक रायपुर व आरंग के नवाचारी शिक्षक महेन्द्र पटेल शामिल हुए।

अभाविप ने 120 मेधावी विद्यार्थियों का किया सम्मान

- ‘जॉब सीकर नहीं, जॉब मेकर’ बनने का दिया संदेश

रायपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) द्वारा राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस के अवसर पर ‘नवदीप सम्मान समारोह 2.0’ का भव्य आयोजन किया गया, कार्यक्रम में सत्र 2025-26 की कक्षा 12वीं की बोर्ड परीक्षा में अपने-अपने विद्यालयों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले 120 मेधावी एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों की मेहनत एवं उत्कृष्ट उपलब्धियों का सम्मान करते हुए उन्हें भविष्य में और बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करना था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अंजनेय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री अभिषेक अग्रवाल जी, ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज के युवा केवल ‘Job Seeker’ बनने तक सीमित न रहें, बल्कि ‘Job Maker’ बनने का संकल्प लें। उन्होंने कहा कि युवा कृत्रिम बुद्धिमत्ता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) एवं आधुनिक तकनीकों से भयभीत होने के बजाय इन्हें नए अवसरों के रूप में स्वीकार करें और अपने ज्ञान एवं कौशल के विकास के लिए इनका सकारात्मक उपयोग करें।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित अभाविप छत्तीसगढ़ के प्रदेश संगठन मंत्री श्री निलेश कटारे जी ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि ‘युवा ही राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति हैं।’ उन्होंने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपने ज्ञान, क्षमता एवं संस्कारों का उपयोग राष्ट्र निर्माण में करें तथा भारत माता की सेवा को अपने जीवन का उद्देश्य बनाते हुए समाज और देश के विकास में सक्रिय योगदान दें।

कार्यक्रम में अभाविप रायपुर उत्तर जिला छात्रा प्रमुख सुश्री किंजल पांडिया जी एवं भाग मंत्री श्री राहुल यादव जी मंचासीन रहे सथही कार्यक्रम का संचालन सुश्री दिव्या माहेश्वरी द्वारा किया गया।

डॉ. चंदेल राष्ट्रीय जैव प्रौद्योगिकी पार्क योजना की स्टीयरिंग समिति के सदस्य बने

- विभिन्न राज्यों में जैव प्रौद्योगिकी पार्कों की स्थापना को मंजूरी देगी समिति

रायपुर (विश्व परिवार)। भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा देश में जैव प्रौद्योगिकी आधारित उद्योगों एवं स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए संचालित ‘राष्ट्रीय जैव प्रौद्योगिकी पार्क योजना’ के तहत विभिन्न राज्यों में जैव प्रौद्योगिकी पार्कों की स्थापना की जा रही है। इन जैव प्राद्योगिकी पार्कों की स्थापना राज्यों के सहयोग से की जा रही है। इन जैव प्रौद्योगिकी पार्कों की स्थापना के लिए वित्तीय सहयोग उपलब्ध कराने हेतु भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर गठित ‘स्टीयरिंग सह प्रोजेक्टर मॉनीटरिंग समिति’ में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल को सदस्य बनाया गया है। यह समिति विभिन्न बायोटेक पार्कों के परियोजना प्रतिवेदन को मंजूरी देने के साथ ही उनके क्रियान्वयन की मॉनीटरिंग भी करेगी।

हर मुक्त बच्चे को मिलेगा नया जीवन, बाल श्रम पर बाल आयोग की बड़ी बैठक

- बाल श्रम कराने वालों पर अब बहुस्तरीय कानूनी कार्रवाई की तैयारी
- बाल श्रम पर जीरो टॉलरेंस, रेस्क्यू के बाद एफआईआर और पुनर्वास दोनों होगा अनिवार्य

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष डॉ. वर्णिका शर्मा की अध्यक्षता में बाल एवं किशोर श्रम (प्रतिषेध एवं विनियमन) अधिनियम, 1986 के प्रभावी क्रियान्वयन के संबंध में श्रम विभाग के उप श्रम आयुक्त, सहायक श्रम अधिकारियों तथा विपिन ठाकुर, राज्य समन्वयक, एसोसिएशन फॉर वॉलंटरी एक्शन की उपस्थिति में आयोग कार्यालय में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में बाल श्रम के मामलों में त्वरित बचाव, प्रभावी विधिक कार्रवाई, विभागीय समन्वय तथा बाल श्रमिकों के समग्र पुनर्वास को लेकर विस्तृत चर्चा की गई बैठक के दौरान आयोग अध्यक्ष डॉ. वर्णिका शर्मा ने इस बात पर विशेष बल दिया कि रेस्क्यू किए गए प्रत्येक बाल श्रमिक को अनिवार्य रूप से बाल कल्याण समिति के समक्ष प्रस्तुत किया जाए, ताकि किशोर न्याय (बालकों की देखरेख एवं संरक्षण) अधिनियम, 2015 के प्रावधानों के अनुरूप उनके संरक्षण, देखरेख एवं पुनर्वास की विधिक प्रक्रिया सुनिश्चित की जा सके। समीक्षा के दौरान यह भी सामने आया कि रेस्क्यू किए गए बच्चों को शासन द्वारा प्रदान की जाने वाली आर्थिक सहायता एवं क्षतिपूर्ति की राशि के वितरण में अत्यधिक विलंब और बड़ा अंतराल पाया जा रहा है। इस पर डॉ. वर्णिका शर्मा ने गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आर्थिक सहायता में अनावश्यक देरी बच्चों के प्रभावी पुनर्वास में बाधा उत्पन्न करती है। उन्होंने इस प्रक्रिया को समयबद्ध एवं पारदर्शी बनाते हुए पात्र प्रत्येक बाल श्रमिक को शीघ्र आर्थिक सहायता एवं क्षतिपूर्ति उपलब्ध कराने पर विशेष बल दिया।

पुरंदर मिश्रा ने उत्तर विधानसभा को दी विकास की सौगात

- दो आंगनबाड़ी भवनों का लोकार्पण, नए सामुदायिक भवन का भूमिपूजन

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर उत्तर विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों की रफ्तार लगातार तेज हो रही है। क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक श्री पुरंदर मिश्रा ने मंगलवार को वार्ड क्रमांक 6 स्थित त्रिमूर्ति नगर में दो नवीन आंगनबाड़ी भवनों का लोकार्पण कर बच्चों और माताओं को बेहतर सुविधाओं की सौगात दी। इसके बाद उन्होंने वार्ड क्रमांक 13 में नए सामुदायिक भवन निर्माण का भूमिपूजन कर क्षेत्र के विकास को नई गति प्रदान की।

इस अवसर पर रायपुर की महापौर श्रीमती मीनल चौबे, नगर निगम सभापति श्री सूर्यकांत राठौड़, एमआईसी सदस्य श्री महेन्द्र खोडियार, पार्षद श्री खगपति सोनी, एल्डरमैन श्री गोपाल सोना सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता एवं स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे।

विधायक श्री पुरंदर मिश्रा ने नगर निगम जोन-2 अंतर्गत वीरांगना अवंतीबाई लोधी वार्ड क्रमांक 6 के त्रिमूर्ति नगर में जिला खनिज न्यास (डीएमएफ) मद से लगभग 11.69 लाख रुपये की लागत से निर्मित दो नए आंगनबाड़ी भवनों का फीता काटकर लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि बच्चों का बेहतर भविष्य मजबूत आधारभूत सुविधाओं से ही सुनिश्चित होगा। आधुनिक सुविधाओं से युक्त इन भवनों से बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक शिक्षा, पोषण और सुरक्षित वातावरण मिलेगा, वहीं महिलाओं एवं हितग्राहियों को भी योजनाओं का बेहतर लाभ प्राप्त होगा।

लोकार्पण के बाद विधायक श्री पुरंदर मिश्रा वार्ड क्रमांक 13 पहुंचे, जहां अधोसंरचना मद से 6 लाख रुपये की लागत से बनने वाले नए सामुदायिक भवन का विधिवत भूमिपूजन किया। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच श्रीफल फोड़कर एवं कुदाल चलाकर निर्माण कार्य का शुभारंभ किया गया। यह भवन भविष्य में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सार्वजनिक आयोजनों का प्रमुख केंद्र बनेगा और स्थानीय नागरिकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराएगा।

इस अवसर पर विधायक श्री पुरंदर मिश्रा ने कहा कि उत्तर विधानसभा में विकास कार्य किसी घोषणा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि एक-एक परियोजना को समयबद्ध तरीके से धरातल पर उतारा जा रहा है। शिक्षा, महिला एवं बाल विकास, सामाजिक अधोसंरचना और जनसुविधाओं का विस्तार उनकी प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरना ही जनप्रतिनिधि का सबसे बड़ा दायित्व है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354